* 78.1

क्रम कामिनी।

শাবিরৰ ঘটাত হুরুন কারা।

विगुष ताजकृष रशम कर्छ् क

2013

श्रीरु उ कि शिष्टवन भारतात

বলিক,তা।

भागा है। शिर्त कर मर सराज बाजू है जिलान है जिलान

बद्ध द्वीप ह

गम रस्क्र गान।

ख्यिक। 1

অসত নগতে বাস, ভারাটাল স্থাকাশ, জাভিতে কায়স্থ কিভিপতি। प्रकृतिका स्थानहा मर्क लाहक प्रभा करा, প্রভাগে সমান লগোপতি।। ভাল পাল্লা জাণিডাবে, বার্থিনে সাব্য কাণ্ড कृत्स भाष्य मर्कारतम सुरुखा। শিল্ড মিশিয় গুলায়, ইন্দ্রার জোন হয়, कारेत के दिश्व का के निर्मात शहर त শংক্ত বেলিক কালান স্থান্ত গুটা সংবাদ, প্ৰভাৱে নাবে লাখিবাতে ৷ ্যার্থল প্রায়ান কক**ে ভাষিতেছে আ**র্বার্থত, বিভাগতী মিবিকে ছাতে প্রচেত্র वहरतते भारत भारत भुभनिनीख इयदराप्त. ্ৰহালম বিভালের কভ। সরি অস অসম্ভান কটার চুক্তরত ভাষিতেতে দুগ আছে। সভ ! বিপক্তের মা'ক্ একে, চাপায়ে পাচত ককে, বাঁদি করে হাথে করে। নারে। শিষ্টের সদা পালন, করে অর্থ বিভারত, भीन जीन महिस सराहत । श्रुष्ट सम अवाहित्य शास्त्रम सहा यहाम.

ন কি ছুঃপ রাজ্যের ভিত্র

1 2 :

गण वर्ष वर्षका, लाख काया सुरुवत, गर्मानरफ रमत्र द्रांक करा। বাশে রাজ রাজেখনী, বিরাজে কেশরী পরি, मगपुषा एवड नामिनी : मृत्यित बुधन वांनी, अटन मम बीनायानि, ৰূপে রঙা ভিলোভমা জিনি॥ নাহি নৃথ্তির সূত, সূত বিনে ছংখযুত, मन करत देवद खादांधना। নানা এত নানা মতে, করে মুপ শান্ত মতে, सूड लोगि नमक ভाৰনা।। च्ध्रदहर मद्दामती, माणा नही सूक्ष्रकारी, धना धना नाती रुक्ति काटत । ংগ্লিক্ড ভগ্নিপতি, আনি আপন বৰতি ভাগিলেন সুখের পাথারে॥ किছु मिन भारत भक्ती, 'इहेरमन गर्डवर्टी, পরে প্রস্থিলেন কুমার। মহানদে মহীপাল, রাখি নাম রামলাল, সদা কাছে রাথে আপনার।। ः नी नत्या ग्रथननी, स्ट्राइट्स मन मनी, অপকৃপ সরোজ লোচন। করি শুগু সম কর, বিষ জিনি ওঠাধর, বৰ্ণসম তক্ত্ৰ অৰুণ। কিছু দিন পরে পুনঃ, প্রকাশিয়া কহি শুন, পুনঃ প্রস্বিলেন নন্দন।

বনরারিলাল নাম, নামা গুণে গুণধাম, নাম তার রাখিল রাজন।।

कुत्रम का मिनी

রাজ্য ভার ভাগিনায়, সমর্পণ করে রায়, তীর্থ পর্যোষ্টনে অভিনাসী। লয়ে পাত্ৰ মিত্ৰগণ, ভাজে দিজ নিকেছন, গমন করেন সুথে ভাগি।! দৈন্য দামন্ত সহিত, আদি গুরু পুরোহিত, क्वतत् रहा (मरम (मरम) जमा काशासित श्रमि, कन्त्रिक श्रमी श्रमी, हरल माद माद्रभा आदिमाम ।। ক্রি অশ্ব অগণন, সংখ্যা করে কোন জন, ছাতি জান দেশ কত শত। দিবা অন্ত হলো পরে, নকলে বিশ্রাম করে, বিভাবরি ইইল আগত।। পার নিত্র রয়গণ, আসি নৃপের সমন, শাস্তালাপ করেন সকলে। করিকুল চুড়ামণি, কারাচাদ শিরোমণি, কহিছেন পরিহাব ছলে।। অবনীতে হারা দার, মনোনীত আছে যার, काशिकत सूची (महे कन। গুলে সাধ্যা প্রিয়া সভা, ভাগ্যবভী গুণবভী, হিত চিন্তা করে সর্বক্ষণ।। र्त्तांग नाम्बद्ध, নূপের প্রধান রত্ন, गर्भामस्त कन नुश्वस्त । কামিনী নামেতে পতি, ৰূপবতী ছিল অভি, ধন্যাধন্যা মান্যা ক্ষিতিপরে।। ठळा हुए मृश्यत्र, বাদ কান্তিক নগার, তীয় স্থা ছিলেন কামিনী।

कुगमरमाञ्च नाम, सूत्रां ने नगरत थांग. সুরেশ নূপের সুত জিনি।। মনো ছঃখে আপনার, তেজে নিজ অধিকার, मर्शत्रा कर्तन अम्। কিছু দিন পরে রায়, একাকী ভ্রমি ভ্যায়, मिथिदलन धानी कक कन।। চুজনার গেল ছাখা হেরে ছুজনার মুখ্ थारन इटक छेठि । यानीवत । धिकानित्वम हास्तरः, कि वीहरा अकामतः, জনিতেছ হেরি একেশ্র। কোখা বাস কিবা নাম, কং নোৱে গুণনাম, (कम । इति तियम सम्म। कात क्षरार्थ (भारत क्षर्थ), सूर्यारहरूक रस्पृत्र कः (पादि कृति निरंत्रम्म h গোদীবরে ৬ মিয়ে, স্কৃষিতেন বিশেষিয়ে, নুপসুত চুংখ আপনার। শুনে যে। নী দিবরণ সাম্ভ করি ভার মন, । বাশিলেন কাছে আপনার।। ক্রামনীর বিবরণ নাপ স্কুতে যোগী কন, खात क्रम क्रिया वर्गन। কুমদমোহন তার, প্রান রূপ চমৎকার, ক'ভিকেতে করেন গমন।। विश्टह इस्त्र कांछ्य, अमा विमान व्यख्य. নাহি নিতা কুধা ভূষী ভার। বিমলা নামে ভাঁতিনী, মিলামে দিল কামিনী,

वैशा मिल दारम आशनात ।।

সাজায়ে কুমদে নারী, সে শোভা বর্ণিতে নারি, লয়ে যত নিত্য বিভাবরী। न्शवादन मरदशाशदन, नृश स्रुकांत महत्तः লুকাইয়া যতেক প্রহরি॥ अक मिली टेम्बांबीस, मर्स्साधिक इम शैन, রস্বদে মাত্রে ভুজনে। कल इत्त बद्धनी, दूरिक निममनि, मश्नात्म काटन नाहि मत्न ॥ পরে অংলি দাসীগণ, । হেরে কুমদ বদন, নিবেদিল নূপের লদমে। ্নিয়ে জোখে রাজন, ্রুমদে করে বন্ধন, কারাগারে রাখে দুভগণে।। নূপস্ত মৃত্ভানে, আনি যোগী নুপবারে, োগী চুঃখ করিল মোচন। খোণীবর নুপ্ররে, বিদয়ে সাক্ষ্মা বংগে, क्गरमत कन विवत्न।। শুনিষে ধরিণীপতি, স্ইয়ে আনক্ষ করিন কামিনীর দিলেন বিবাস। कृषनदराहम जदर, जानत्क मित्रशा स्ट्रा. कुन कार्य। करत्रम निकार ॥ कुमनरमाह्न दाह, थाकिटर सूर्य ख्याह, নিজ বালে করেন গমন। চন্দ্রভূম নৃপবর, সংরে হরিষ অন্তর, 🦠 कांगकादा मिल तक्षम।। कामिनी श्वानत्य ज्ञी, मक्त नत्य हुई मानी,

চলিলেন নাথের ভবনে।

কুমদ কামিনী।

करत ভति चारताश्य, कुमनरमाहन कन, খুলিবারে নেকি। বাহিগণে।। প্ৰন্দম গ্ৰহেন, 🐪 বাহিছে নাবিকগণে, কাশীধানে হল উপলিত। নাবীক সকলে রায়, করিল তথা বিদার, বঞ্জে কুৰে কামিনী সহিত। কহি শুন ভাগাংৱ, স্টানুকান্ত সদাগ্ৰ, ৰামেতে আছিল ধনধান। কীশোরি লামেতে কন্যা, এপেতে পর্ণীধন্যা, ভুক তার কামের কামান।। নমূল কটাক্ষ তাণ, হেরিলে সে হরে প্রাণ-বেক ১৬) হয় ক্রড ভারে (িল দুল যিনি ন্ৰা, পিক্তৰ যিনি লাহ, ात पुरा माति सारि धाता। গটে হেরে গার কপ, ভারে হত নবভান, माल पुरस्य कांकुल अस्तः। সক্রোপ্রে ভূই জনে, মিলন হলো যতান, মলেকুথে ভূজে নিরন্তর ।। काशिमी विकास मर्खा, माबिटक आश्रम कर्य, কালোরিরে বিবাহ করিল। नुकारम जालक मार्थ, हुई मोती लट्स नार्थ, মারী হয়ে প্রদানে ছলিল।। लाय का मिनो की लाति, कानीयाम छाला कति। চলিলেন আপন ভবন। कुमन्द्रमाह्म द्राह्म, कृतिन नाज दिनाह्म, উপ্ৰিত জনক সদ্মা।

कुमन कामिनी।

হেরে সুত নৃপবর, হয়ে হরিষ জ্জুর,
দীন হীনে অর্থ বিতরণ।
হলো সুথি প্রবাদী, আনন্দ,নাগরে ভাসি,
জন্মধান করে সর্বজন।
জন্জা নগরেশ্বর, করিয়ে ধুগল কর,
প্রণতি করেন কবিবরে।
কামিনী কুমারি ধন্যা, সাধ্যা সতী মহামান্যা,
জুলা নাহি জন্মী ভিতরে।।
কাবির কন রাম, ইতিহাস হল সাহ,
জাউনিত হেরি দিবাকেন।
নৃপোর বিজ্ঞানত, করিল সতে ল্মন,
নুগণর প্রানেশে স্থান্তের।।
ধামবাজারে নিবাস, রাজক্ষ মুপ্রকাশ,
বিভ্ডিল ভাবিয়ে ভবানী।
১ই ম্ম নিবেদন, স্মীপে সুঝ্লগণ,

দীন হীন বলিতে তি জানি॥

সুগীপার

ুমিক)	7. 5
্বাকপুত্র ও যোগীর বিষয়ণ	a
ন্ত্ৰপুত্ৰের গহিত যোগীর কথোপক্ষম	55.
চোগী কন্তক কামিনীয় রূপ বর্ণন	50
যোগীর নিকট হইতে কুমলেং বিদায়	\$8
ভুমদের আদ্বিপ নাবে জানীত ও সহচ্চীলণ কর্তৃত্ব	i
बर्रहा भाव वर्णन	34
কুলদমোহনের বিনলা ভাতিনীর নাটিত নাক্ষাৎ	Źκ
विभवात निकटि कुमरनत कामितीय शिक्षिप्र किन्द्रामा	২৩
कूमानत विचन्ति गरिक करणाश क्यम अ आरक्स	₹\$
कामिनीय मिक्ट्रे वियमाह ग्रथम अकुमद्रम्य शहितम	3.8
কাসিনীর কোটালগ্র-এ এতি আমেণ	÷ 4,
कुन रहत सम्मेत अन यादन ए काश्मित निष्ठ शिला	K, S
द्वामन कार्मिनीय विवाध	24
কামিনীর রহাক্ত	23
কুনৰ কামিনীৰ বহাত	22
कामिमीत कुमरमत गहिक हुड्डाख	63
कूनन रामिनीत विदाद खांडल	હક્
কামিনীর আক্ষেপ	24
ক্ষনৰ মঞ্জীৰ লাণীৰ নিকটে গ্ৰমন	82.
ক্রিদীর প্রতি মহিধীর ভৎ ধনা	89
সাব্দার কোটালগণের প্রতি আদেশ	59
কামিনীর আক্ষেপ	
কামিনীর বিলাপ ও কুমদের চোর ধরা আক্ষেপ উত্তি	4.7
চোরের রাজগভায় কথোপ কথন	43

अंश्वाःभृतीश्वःभृतीश्वः	
বিষ্ণাতে রাজ্যভার আনিতে গ্রাজার আদেশে ও	
टक्सफे। नर्गहर्ग सम्ब	核色
विमुलादेश देलश्च त्यांनालवर्धन लाखग्रनाय छिलानीक	43
कुनरमत हा बाहि सिक्टहें आर कन	ib
कालपुरक्षक रव किन किन्नरहे । भन	478
বেশ্য নিবে প্রতিক স্থানক্ষেত্র করেছাপ্রকর্মন	65
ক্ষুস্তেত্ত বহিছত ধ্যোগত ছাজ্ঞানভাৱ জিপনীস্ত	*
प्रमप्त कार्रिमीय गोदा कर्तुक दिलाँद	14.19
ু এন বংশিমনীর বৃহাক্ত	**
जुन बराबाहर एक वा बात विकास का बराब वार्ष पत	र्शसः ५३
अ, भिनी जोश्क कुमल्टमाइटना दि राउ	£s
क्रूप्रम कर्त्तवमीत काशियादय मिनावेश का स्थि मारिया	A PAR
निहरू मुख्या व के लहें	1 440
्रमापन्त्र प्राप्तकान्य च मनित्र कि.मार्गीत मिलाई जुमा	Y.S.
11/222	360
कुमर्भव लिरम्शनीत शास्त्र मिना क किरमानीत कार	罗科美 亚
कुं महत्त्व विकर है किरणातीत करता वीची ज्यादत है।	
কুয়াসং বিশিষ্টে কিশোগীর সালে এমন	ir:
স্থান লৈ লেক্টোর একজে ও বিবাহ	50
কুমৰ বিশেষ্ট্ৰীৰ মাৰ	\$- b -
কুমপের সহিত্য	94
মতিৰ ক্ৰিমীকে কিশোৱাৰ পৰিচৰ	35
কামিটার কিলোমীর সাহিত বিবাহ ও তমি আরোই	4 30
ফানিনীর কিশোরীর সহিত বহাস্য	45
कु मनराग्रहास्त्र आरक्तन । इति आंदर्शसन	3+0
পুনদ্মোগ্নের স্কুরাষ্ট্র নগরে উপানীস্থ	348

কুমদ কামিনী নামক গ্রন্থারন্ত।

রাজপুত্র ও যোগীর বিবরণ। নিহ[°]ভ কাননে যোগ করে যোগী**বর**। জন শুন্য দেই স্থান থাকে একেশ্বর।। এডাইবে নালা দেশ পর্বত কানন। पुरुषि नात्वम शुरु जरमन शुक्रम ॥ উপনীত নেই স্বালে বাজি আয়েখণে ৷ ८४८२म ८७ क्राह्मी स्वर्ग स्वाकास्य । প্রথমিয়া নুগায়ু রা ভারেম অঞ্চলে ট অপ্রতি খন ক্ষত্তেতে এতদীন পরে । প্ত নীৰ ভাষি খ্যামি জাননে কাননে। द्दनक्ष र स् च्हारिय ना दम्यि नव्यत्न ॥ রাবর সমান জ্যোতি কান্দ ভিডরে। মণিময় দীপ্তময় নল্লাট উপরে।। ्र शिक श्रेटम करें। शदहरह फूटमट्य। সাপিনী ভাপিনী জান শোভিছে শিরেতে ।। কটাক্ষ করিয়া রায় কন যোগীবর। কে তুমি একাকি এলে কানন ভিতর।। কিব: নাম হয় তব কাহার ভন্য। কি আন্দে এনেছ হেখা কোধার আলর।। ্কহ মোরে সভ্য বাণী সাধুরনক্র। मन पूरशी (मधि किन विद्यवनन।।

कूमम कामिमी।

রায় বলে কহি শুন মম বিংবণ। ्द्रतिष्ठि माट्यट्ड तांका सूटतव तांकम।। •ভাঁহার ভনন্ন আমি গুন ম**হাশ**য়। कुमन्द्रभार्भ नाम स्वद्रि जानम्। বন্ধুর বিজেনে আমি ভামি নিরস্কর। তেলে ঘাম করে বাম কানম ভিতর !! মতেক কুজমগ্ৰ ছিল সম দেলে। व्यर्थ भीम रहती स्मादत खुद्ध करत स्मारय ।। স্থীয় মনে বাসী লাজ ভাগার কারতে : দিব: বিভাবতী থাকি স্বল নয়নে গ বোখাও না পাই ধীর জুড়াতে জাবন: বলুর বিভেনাখনে পড়ে নদা মন। নি ক্রি কিনে নিবার্ত্ত মনেরি খানল। অনিমিধে সম ভাতে ৭০ছ সে আমল । জন্ম ক্রেছি লয়ে ধন ভার্মি যত। কুসকে কুপ্রে নম চিপ্ত হরে রঙ !: এখন ভাবিতে গেলে পাৰাণ বিদ্ধে । ধরণী হুফাক হলে প্রবেশি ভিছরে 😗 মনেতে ভেবেছি নার মেই পরাৎপর। অসপে সংস্থার মাজ বভা যোগেশ্ব ।। ধিকুরে প্রেমীকগণ বন্ধ মায়। জালো। বারেজ মা কর চিন্তা সেই নক্ষলালে । যার মামে ভবে নর সুধে হয় পার। কালে ভাবি রাজ্**রক্ষ রচিল প্রা**র্ট

রাজপুত্রের সহিত যোগীর কথোপকথন। পদার।

ক্ৰিয়ে ক্ৰেন যোগী গুন হে **রাজ**ন। ভাহার কারন কেন এত উচাটন।। देशवीयत देशरीयत छात कश्मीटम । जमा कथ (गई मांग श्वम श्विष ॥ शुर्थंद्र मगन्न २हें।ल भिरता बख्नुभंग : ত বের সময়ে হজু মেলা ত্র্যটিন।। তাতএর কই শুন ওতে নরেশর। ্ৰেম্প গ্ৰামক্ষর হওমা কাছর।। এছ হে প্রতিপে ভূমি প্রায়ের জীলন। গাত কৰি কলে হয় পান্তি কৰু মন।। এতন অধিকা দিবা আছে নুপ্মণি। मध्य कहरा योजा श्रेरव उक्रमी ॥ নিশ্বতে আলিবে হেখা ৰমজন্ত কতঃ দেখিলে আহেন্দ্রে তথ প্রা: হবে হত।। বভবালাবাধি সামি থাকি এ জাননে। িছঃ গিড়া যোৱে দেখি নিশ্চরীগ্রে।। হলতেশে মায়াজপ ধরে হল করে : নারীয়পে ভ্রমে তারা কান্স ভিতরে।। প্রতাহ বাকোর ছলে পোহার জামিনী। ছরিবে ভোমার মন দেখায়ে মোছিনী।। এখন নিম্ভি রাখ ভূমি ধৈষ্যধর। থেকোনা থেকোনা হেগা যাও স্বানাস্থর।। শুনিরা যোগীরে কন নূপের নন্দন। लहा छिन। आहि गम रहेरत घडेन।।

দেখিব বনের শোভা কেমন নিশীতে : যায় যাবে মম প্রাণ ভয় নাই চিতে ৷৷ ইহার নিকটে স্থান আছে নূপবর। কান্তিক নামেতে অতি বিখ্যাত নগর ।! চম্পূৰ্ত নামে তথা আছেন নুপতি। কামিনী নামেতে স্থতা অতি ৰূপবতী 🚯 প্রম রুপদী দেই ওপে ধরা ধন্যা। নাস তথে গুণবঙী দুপতির কন্যা।। প্রতিত্তো কৰিয়াছে সেই গিতার সদনে। গাণ্ডিত কিশোৱে মন ফুলিবে ন্তমে।। अ कांत्र कलावरि दिना साहि इस। भिका संपूर्ण र फियर नुस्पर प्रमध् ॥ অধ্যায় খে মন হঃবেং নিজ নেলে জার। करात किराइ अभि २ (व मन, हाब ।) চইকে এখান হতে ভ্ৰীয় যোজন। ছিতীয় দিবলৈ তথা করিবে এখন। প্রমধ্যে পারে ওঠ জুন ফুন্ত আম। বারেক পারিকে তথা করিতে বিজ্ঞান।। মগরে পে:ছিলে গাবে বেবা ইচ্ছা ভব : তাতুলনা সেই স্থান অধিক কি কৰ।। অতএব কহি শুন ওয়ে নরেশর। গেকান থেকোনা খের ক্রনে ভিতর।। ুড়াৰে তাপিত প্ৰাণ জাবে মন ছুংখ। রাজকৃষ্ণ ভাবি কুন্দ রচিল কৌতুক।।

क् यह कामिनी।

रगंभी कर्ड्क कामिनी क्रश वर्गन। पीर्य-जिल्मी।

শুনিরা বোপীর বাণী, প্রবোধ মনেতে মানি,

कशिर्द्धन त्यांगीरत तांकन।

কালিনী সে রসবতী, সে কি ৰপৰতী **অতি,** কহ গুনি ডার বিবরণ।।

কৃহ শুনি ভার ।ববরণ।।

যোগী কন নৃপস্তত, গুন হয়ে হর্যযুত্ত, সেইতপ বর্ণিবারে নারি।

প্রফুল কুমদ হাসি, হেতর জার ছঃখরাশি,

চার তুলা মাহি হেরি নাবী।

নেরুল লাপতা ভার, তে **হেরেছে এক বার,** নিরুবর্ধি ভাবে নে **অন্ত**রে।

িবে মেদিনী ভারে, স্থারি **মানিয়াছে ভারে,**

२८क एएटक भन प्रःशं कटत ॥

्रितिद्व रम तथ भूमी। सूह्रभाटन भाटन वनि,

शीय बटन् वादन मना वास्त्र।

শুনিলে তাহার ধনী, জুচ্ছ হবে পিক ধনী,

পিক বৰ শুনিয়া কি কাম।।

দিনিয়া মরাল গতি, চলে দাৰ রববতী,

चकुनमा अर्छत कुनगा।

প্রভাতের দিনমণি, জিনি তাহার বরণী,

হেরে ভূলে কুলের অঞ্চলা

নিন্দিত মাজা কেশরী, কিবা বেণী আহা মরি,

ধন্নু সম ভুক ছাই ভার।

হেরিরা দশ্দ তার, সুক্রা লাজে আপানার,

नित्त जूदिन शनिशंत ॥ अतिहास

কি ছার ক্রক শাখি, যে হেরেছে ভার শাখি,
হরিয়াছে ভারে কটাক্ষেতে।
কুচ ফিবা বক্ষপরে, গিরি সম শোভা করে,
অক্ষে অক্স ব্যাক্ষে সচক্ষেতে।।
নবিনে রবিবা ধনী, পাইবে যে গুণমনি,
কত সুখী অন্তরে হইবে।
কহি শুন অতপর; ভেবনা হে ভারান্তর,
পুণ শনী বোড়শী পাইবে।।
অপার সুখেতে ভরি, সুধানুখী সে সুন্দরী,
হইবে হে চাশার কাণ্ডারী।
রাজর্গু ঘোষ ভনে, রেখ হরি জ্রীচরণে,
দীননাথ গোলক বিহারি।।

যোগীর নিকট হইতে কুমদের বিদায়।
কামিনীর কণ গুনি কুমদমোহন।
সূল্য কলেবর বিসাদিত মন।।
সেই রূপ রুলুপ ভাবে নিরস্তর।
ফার বিধি কেমানতে হেরিব নয়নে।
হার বিধি কেমানতে হেরিব নয়নে।
হারে না পাইলে প্রাণ তাজিব জীবনে।।
সে আমার আমি তার হইব এসাদ।
ইহাতে যজ্ঞপি বিধি ঘটান প্রমাদ।।
বেই রূপ দিবা নিশি হেরি যে অক্তরে।
ধ্যানে জানে মম প্রাণ ধৈরজ্ঞ না ধরে।।
কি হল গুনিয়া তার কপের কাহিনী।
ঘাছি বেঁধা মূগ সম দিবস যামিনী।

कूमन कामिनी।

গেল প্রাণ নাহি ত্রাণ করি কি উপার। ভাষার বিরহে বুঝি ভেবে প্রাণ যায়।। চন্দ্ৰাননী চন্দ্ৰামূখী দেহ দরশন। এখন তোমার লাগি জার যে জীবন।। প্রথমিয়া যোগীবার নত করে শির। पूर्वा वाल एक याजा कवितन भीत। এডাইয়া বনপথ সুখেতে রাজন। বশিষা তরুর মূলে ভাবিছে তথন।। স্মূরের সরোবর অতি মনোহর। চারি পাথে পুষ্পত্র গোভিছে বিস্তর। হেন্কালে চারি কন।। আসে উপনীত। কুমদে হেরিয়া দৰে ভাবে চমকিত।। এক ধনি বলে একি হেরি রুক্তলে। গগণের শব্দি কেন রমেছে ভূতলে।। ভাতুলনা এইৰূপ ৰূপের শাগর। ইংরে রুমণী ধন্য অবনি ভিতর ।। আর এক ধনী বলে স্থী মরি মরি! বানে মম মন সদা বাস হাজা করি।। উগারে লইয়া সুখে ভবে করি খেলা। मत्मत्र मार्थ के हारक द्रित हरवना ।। জায় যাবে কুল মান তাহে কভি নাই। কদত্রে রাথিয়া সদা জীবন জুড়াই।। আর ধনী বলে সই কবকি অধিক। সামার মতন নারীর কপালেতে ধিক।। জন্ম জন্ম পতি সম তুই পদে গোদ। শ্ৰপেতে কন্দৰ্প যিনি নাহি বোধা বোধ।। এমন সুস্মরী আমি থাকি মূরমান। পতির পতিতে কাল গেল অভিযান ।। ्राबादन वा बृद्य मिन्नी मना कुछ कदत्र । বিফলে জনম গেল ভার হাতে পড়ে॥ এখন ভেবেছি মনে হ্ব বৰ্ডারি ৷ উহারে লইয়া বাব গৃহ <mark>বাস ছা</mark>জি।। বারেক ছেরিয়া এ যে ছরিলেক প্রাণ। क्षिन विदेश कुन नाहि (पथि बाप ॥ আর এক ধনী বলে কি কহিব হার। ক্ষবিবৃদ্ধ উহারে হেরিতে গন চার !! কি করি বাদেতে গুরুজনেরে ডরাই। ना इटन छेश्राद्य लट्य अष्ट्य वनाहै।। ুকুষ কঠিন ৰছ মাহি দয়। ধর্ম। অবলা মন্ধায়ে কেরে এই হার কর্মা। কহ দেখি বসরাঞ্জ তব কিবরণ। কি লাগিছে বলে খেখা কোখায় ভবন ট হরে লয়ে মন প্রাণ বংস তরু হলে। ष्यवण हरत्राक् अञ्च नाति स्थरिक हरण ॥ (भवडा शक्सर्व किया रूख निर्माहत। अकृष करिया कर् श्रामत गापत।। নাহি বৃদ্ধি প্রবিচয় সেহ গুণমণি। ভাজিব শকলে প্রাণ আমরা এখনি। নাহি বাদ ধর্ম ভর ওহে রসরাজ। অবলা বধিতে চিতে নাহি বাৰ দান্ত ॥ আমরা কুলের নারি নাহি জানি বালা। কাননে বসিয়া তুমি ৰখে। কুলৰালা।।।

অতএব কহি শুন ওছে মনচোর।
তকর হইরা তুমি কর এত জোর।।
নাবের উদ্ভান এই পিরীতি রাজার।
আনন্দ নামেতে কন্যা আছুরে তাহার॥
রার বলে বাস মম লম্পট নগরে।
বেলিক আমার নাম ব্যক্ত ধরাপরে।।
বাহুক্ত কয় রার তুমি হে মুজন।
বাক্রেতে ভুলতে পারো পুরুষের মন।।

ক্ল্যুলের কান্ত্রিপ নগরে উপনিত ও সহচীরগণ কর্ত্তৃক বারো মাস বর্ণনা बिशमी। কি দেবিত্ব স্বাজি চকে, ত্রুকসি করিয়ে কন্দে, भित्राहिल कानिवादत नीता बिटल नव महहती, जात कल द्वारत सदि, करत यम इश्र माहि श्रित ॥ কি করি কুলের বালা, নাথ দিলে ভাল স্বালা, निवादिव कौदन পতता। অতুলনা সেই ৰূপ, বিভূবনে সে অনুপা, ভারে বিধি গড়েছে নিজ্জন।। আহা নরি কিবা মুধ, হেরে যার মন ছংখ, स्वर्ग कीवन छात्र काटह । হার হার প্রাণ বার, সে জন পড়ে ধুলার, चीत्र मत्न मत्ना इःत्य छाह्य ॥ ष्ट्रांद्रा दम क्रांस, द्वतित्व त्य आव क्रांस, वारि मन वार्त नाय गाहै।

कि कर कू लड़ मार्गे, लाक लाख माहि शाति। গুরুজনে সদত ভড়াই।। करि खन नुश्राना, त्र दिन विषय खाना, সে জ্লা নিভার না স্লিলে। বে মোরে কটাক্ষা বাণ, হেনেছে করে সন্থান, कामानरम महिरम परिरम ॥ আমরা জনম ছু:খি, কোন কালে নাহি সুখি, কালে কাল সহা জ্ঞান করি। रेवनार्थ (य करत आन, एन विटन (क करत जान মনানলে পুড়ে প্রাণে মরি।। বিষম বিরহানল, ইচ্ছা খেতে হলাংল, যৌৱন স্থালায় প্ৰাণ হত। কৈডে ভপন কির্ণে, বারি এলে ছুনরনে, ষর্মময় তত্ত্ব ওকীগত।। জাঘাতে নিরদ ভাকে, সনা প্রাণ চায় ভাকে, देश्या कत्र रहेन कश्व। আব্ৰেতে ৰবে বারা, সম নেতে শত ধারা, शिटला नाथ कीवन खोदन !! অনাথ করিরে দাথ, গেছে হানি বজাঘ্তে, ভাত্তেতে আকুল মম প্রাণ। अवारक को शाहे सूर्य, क्रांस वाएए मन छू:चे, সদা ভাকি রাখ ভগবান।। व्याखितन भूकांत्र श्रम, व्यामात्र ना दत्र यूम, मकरलंद्र शाँख वारम धरम । कात रमिश्र भएए बरन, हेक्का रह याहे दरन,

मन इः एवं काशांत केटबटम ॥

কাৰ্ত্তিকে জ্ৰান্ত ছিতিয়া, দিব কোটা সুখে গিয়া, সংহাদরে মহা সমাদরে। कांदर वानि नर्नाननी, नमा कदर कलकिनी, भूगंनानी कुक् करत मरत ॥ জন্ত্রাণ মাসের কথা, থাকি সই যথা তথা, কৰ কিবা আমাৰ ছুণ্ডি। নিশিতে যে করে অঙ্গ, সদত পাই অভিন্স, যন্ত্ৰণ দিওনা খাডুপতি। (भीत्य भीरकत প्रजातन, यम गमा जारत जारन, কান্ত বিনে হতেছে প্রাণান্ত। गारधरक दमस काल, काकित्लव सरवांचान, কৃত্বৰে বাচিনে নিভান্ত। সে কাল সুখের কাল, কিন্তু মম পক্ষে কাল, कानकाकिल कुल भनाता। মলহার সমীরণে. कोरम छ। बिकीरस्य সুখি আমি নাহি কোন কালে।। काल्खरन मनाखरन, जनि क्षारन मनाखरन, দোলবাতা হর মাধ্বের।

তাহে হব সর্ব জন, হব ভক্ত মন মন, বাড়ে শোক কুরিজে নাথের।। চৈত্তেতে মধুর মাস, সুধ্যমর স্থপ্রকাশ, কিন্তু ছঃখ আমার জপার। রাজকৃষ্ণ কর নাথ, দিনবল্প দিননাথ, কর দিবে ভবেছিরি পার।।

কুমদনোহনের বিমলা জাঁতিনীর সহিত সাক্ষাৎ। পথাব।

সংচরীগণে কন নৃপের কুমার। কিবা নাম এক্ষানের এরাজ্য কাহার।। কিব। নাম নুপতিব কহ বিবরণ। প্রম ধান্মিক নুপ কয়বা নন্দন !! সহচ্টীগণে কয় শুন মহাশয়। কান্তিপনগর নাম সর্ক সোকে কর।। চন্দ্ৰচুত্ নামে নুপ জাহিতে কায়স্থ। জাতি বলা আদি কত তাহার দারত। সম্ভান নাহিক তার একতো নদ্দিনী। কি কহিব ছার স্বপ নামেতে কামিনী !! বসিয়ে ভক্তর তলে কুমদমোহন। বাসার কারন অভি বিরুদ বদন ৷৷ कल इत्ला निवाकत अमन नमदत्र। বিমলা ভাঁতিমী এলে। অতি জাত হয়ে।। মনে মনে ভাবে ধনী কি করি উপায়। এ मिनी मा इटब मिलि विद्यानीत आहा। ন। হবার তাই হবে ক্থা কই ছলে। হাসা করিয়াছে কোথা যাবে কোন খলে।। সুধালে পাইব টের বনে যেবা আমে। भीदि थोदि काष्ट्र शिद्य विभवा विकारमा কহ শুনি ভাগাধর <u>র</u>সে কি কারণ। किया नाम कांत्र सूर्व कांशांत्र जनम।। শুনিয়ে কছেন রাম শুন পরিচয় গ কুমদমোহন নাম শুরাটে আলর।।

कुमन कामिनी।

ছি ভীয় দিবস হলো এসেছি এখানে। বাশার কারন জমিলাম কত স্থানে।। কোথাও না পাই বাদা কি করি উপায়। ভারিণী যদি কূপা করে রাথেন পার।। তবেত পাইব বাসা পূর্ণ হবে আশা। मञ्जा अदमरण यांच रहेश देववाला ॥ বিমলা কহিছে শুন নৃপের কুমার। शुभा करत यां अविष जानात जायात ॥ भाहेदर ऐंडम स्थान एका हैएका कता ज अधिनी इव त्रात्री द्वन खनाक्द्र॥ न देश सम भूख दना धाकि धकाकिनी। ष्क्र अभारीय सामि कि कव कारियो।। বাটা মার ভালে। বটে অভি পরিপাটি। নন্দ্ৰ,খেতে সহোৰর পাঙ্গে কালী ৰাটা॥ नक्षु महिल यथा नित्त विदाक्षित । नृशंब्द शूर्स कीर्डि चाटह अकाणिक।। কং বিমলার ৰূপ না দেখি স্বত্তপ ! বিদেশী ভুলারে যায় তৈতে।কেন অনুপ।। অ'নে কভঙন্ত মন্ত্ৰ ছিটে ফোটা আদি। মুখেতে সুধার ধার কুন্দলের ফাদি।। কথার কে পারে ভারে যদি ধরে ছল। পড्नी भनारम सात्र छटम कतः श्ला। দাঁতে মিশি মুখে হাসি পাকি মালা গলে। পরনে রক্ষের সাভি কথা কয় ছলে ।। বুঝিরে চতুর রার ভাবে মনে মনে। কি বাক্য বলিয়ে আমি ডাকি সংখ্যমে।। ভুমি আরি আমি নাতি জেনো গো ভোমার। এথানে আমার দেখ কেহ নাহি আর ।। বিপদে প্রভিলে ভূমি করিবে উদ্ধার। পত হতে ভূমি আয়ি হইলে আমার।। বিমলা বলিছে নাতি চলহে আলয়ে। मिवः व्यरमान हत्ता मन्ता। यात्र वरतः। রাধ বলে শুন আমি জিজাসি তোমারে। দাস দাসী সঙ্গে নাহি কে জাবে বাজারে !! ন্তান মোর গুণুমণি গুণের সাগের। তাহার কাবণে ভূমি হওনা কাতর।। আনি তব দাদী ওহে কি লাজ কিন্ধরে। যথন যে আজ্ঞ। ভূমি করে। রূপা করে।। সেই দণ্ডে সেইড কর্মা করিব ঘনে। বছ ভাগ্যে পাইয়াছি অমলা রতনে।। ভূমি ওহে নুপসুত আমি জনাধিনী। पुना मा कड़िल स्मारत ভाবিয়ে छःथिमी ।। র দ্বন করিয়া পরে করেন ভোজন। ভোজনাত্ত ভাত্ত যোগায় ভতকণ। পারেতে করেন রায় আয়িলো আমার। ভূমি কি আন কিছু রাজার সমাচার।। রাজার বাটাতে নিভ্য যাই বৈকালেতে। অন্দরেতে যাই ভাল বালে সকলেতে।। नविद्याव कर खनि नुत्थत कारिनो। নুপের সম্ভান কয় কয়ব। নক্ষিনী।। त्राकात वहन्त्र क्छ क्यवः दागी। প্রকাশিয়া কহ আয়ি সবিশেষ বাণী।।

कुमर क्षिनी।

विभवः कहिए छन कहि विवत्रगं। এক মাত্র পাট রাণী নাহিক নক্ষন।। কামিনী নামেতে আছে নুপের কুমারী। কি কহিব ভার ৰূপ বর্ণিতে না পারি।। কনা। যোগা পাত্ৰ নাহি পান নুপ্ৰব। কন্যার বিবাহ লাগি ভাবে নিরস্কর।। নুপের কুমারী মোরে বলে মাদী মাদী। নান। দ্রব্য দেয় মোরে ভাবিয়া হিভাশী॥ রায় বলে বিধি মোরে ভাল মিলাইল। এত দিনে ত'্যা হ'বা হুংধ যুৱাইল।। এ নারী হইতে পাব সকল সন্ধান। কেমনে কহিব ভার করি অনুমান। কহিলে প্ৰকাশ পাছে করে এই ভয়। গুণ্ড কথা ব্যক্ত করা উপযুক্ত নয়।। ছল করে মন বুঝি যা হবে পশ্চাতে। হায় বিধি তুলি বাদি হওনা ইহাতে।। তমি ধদি হও বাদি কে করিবে আগ। শতেতে কলক হবে যাবে মম প্রাণ।।

বিমলার নিকটে কুনদের কামিনীর পরিচয় জিজাস।।
ভাবিয়ে চিন্তিরে রায় কহেন তথন।
কুধাইরে দেখি দেখি কহিরে বচন।।
ভাবেতে বুঝিব পরে যেবা খুক্তি হয়।
তথন করিব রাজ্য মাফিক সময়।।
ছলনা করিয়া যদি মঞ্জাইতে চায়।
চলিয়া যাইব আমি মঞ্জারে উহার।।

কুমদ কামিনী।

আছে। তারি বল তুমি জিঞানি তোদারে
নৃপের কুমারী নাকি পণ্ডিত বিচারে।।
তারি লাগি ভারো নাকি বিবা নাছি হয়।
শুনেছি লোকের মুখে নামান্য তো নয়।।
শুনে বলী কয় নাতি তলিহে ভোমারে।
চার ফেলি চারে মদি পার আনিবারে।।
নাচুবা গোপনে ইহা নারিব করিতে।
ভোক হয়ে বাদ করা ভুজক সহিতে।।
রাজক্তে কয় রায় কি ভয় ভোমার।
ভাতিনী হইতে হবে কার্গের উদ্ধার।।

কুমদের বিমলার সহিত কথোপ কথন

গু আক্সেপ।

হাবু-ব্রিপদী।
কুমদমোহন, ভাবেন তথন,
ভারে হেরির কেমনে।
প্রাণ ভার ভরে, ধৈরজ না ধরে,
হেরি সমনে সপনে।
দিবা নিশি মন, হর উচাটন,
ভেবে ভেবে প্রাণ যায়।
কি করি বলনা, সহেনা যাতনা,
কেমনে পাইব ভার।
মণি হারা কণী, না হেরে সে ধনী,
আমি আছি সেই মত।
কোথার কামিনী, নৃপের নিফনী,
মন চাহে অবিরত।

श्रुत्व मात्र छात्र, वाँहिटन धरात्र, (कटन काम जुत्र चत्र এপ্রাণ বিদরে, কাঁদে তার তরে, आंव इत्ला (मशंखत ॥ ্ট খপ কত, ভেবে অবিরত, পাৰে কৰে সময়ণ। লাবিলে কি হবে, সমূরেতে হবে, रांश बीमधुख्यम ॥ टाद्र यपि शाहे. बीदन कुएाई, ছবি কৰু না নৈৱাশা। ८७८व भिन्न भिन्न, "एस् इल कीन, ক্রমে বাড়িছে পিপাসা।। বিমলাবে কন. তথ্য রাজন, **्रक्ट क्रिय वस्त्रम्।** আক্রা পেয়ে রামা, কক্ষ্যে করি-ধামা, জায় বাজারে ভখন।। যুদ্র দিল রায়, ভাই লয়ে রায়, পথে कर्य मरन मरन। স্থানি এক গুণ, কব চারি গুণ, টের পাইবে কেমনে॥ যদি টের পায়, ভুলায়ে কথায়, मिव श्रामि इटल कटल। হাত লাড়া দিয়ে, এল দ্রবা লয়ে, ডাকে নাতি নাতি বলে।। नृत्भित्र नन्मन, कत्रा श्रामन, আনিয়াছি জাজামত। [0]

বের ইচ্ছা কর, তাই আজা কর, বোগাইব সেইমত।। বাজরুষ কর, নৃপের ভনন্ন, মন জির কর ধীর। পাইবে কামিনী, নৃশে মন্দিনী, ঘাকি বাবে উাতিনীর।।

ঞামিনীর নিরুটে বিমলার গমন ও **কুমদের প**রিচয় লান পুজা করি দাখে কুমন্দোহন। পথশ্ৰান্তে নিদ্ৰা জান হয়ে অচেতন।। বিষ্ণা ভোজন করে ভাবে মনে মনে। ইহারে ঘটাতে পারি কামিনীর সনে।। ত। হলে অধিক ধন পাব গোপনেতে। গোপনে করিব কার মজিবে গ্রেছে ! আ্যার কি ক্ষতি বল আগে পাব সুখ। পশ্চাতে যাহবে তার দেখিব কৌতুক া ক্রিলে তো সভা আছে জানি পরাৎপর। তখন তো করি কর্ম যাহবে তাপর।। খাই দেখি রাজ বাটী কামিনীর কাছে। যখন যাহনে তাতো লল্লাটে যা আছে।। जावित्य विश्वित्य धनी गांत्र भीता भीता भीता । रत्न कि इत्न এ क्या क्व कामिनौरत ॥ একেভো নুপের সুতা তাহে বলে মানী। কহিতে উচিত কিন্তু মনে লাম বাসি।। প্রবেশিল নৃপ পুরি কত কথা বলে। উপনীত হল রামা **অব্দর মহলে** ৷৷

বনবি বনবি বলে ডাকে বারে বারে i অনাথিনী বলে কি মা ভুলেছ আমারে।। কামিনী কহিছে মাসী এস এস বস। দাল বাসা কিন্তু মাত্র বচনেতে ভোষ।। এতদিন কোথা মাসী ছিলে কুতুহলে। थ्य कृत्व **कांकि** दृक्षि **अत्मह (भा हत्न ॥** শুনে রামা বলে বাছা কৈতে বাসি লা**জ।** ভোগারে হরিতে গো এদেছে বুবরান্দ।। বাসা করিয়াছে সেই আলরে আমার। সূর্টি নগরে বাদ রাজার ক্মার।! পরম পাণ্ডিত রূপে ভূবনলোহন। আদি আলি বলে নাম কু নদমোহন।। নিতা নিতা বলে মোবে দেখাতে ভোমায়। প্রবর্গনা করে রাখি কথায় কথায়। আমার কি সাধা বল করিছে একায়। আমি ভাবি প্রমাদ গুনিলে মহারাজ।। গে।পনেতে না'হ ব্রুবে এসর ঘটনা। পরেতে প্রকাশ হবে হইবে ঘোষণা।। ভূমি যদি বল বাছা পারিবে রাখিতে। তবে অংমি পারি কিন্তু এ কর্ম করিতে।। নতুবা একাযে আমি কিছুই না জানি। তব বাক্য কিন্তু আমি বেদ তুল্য মানি।। কামিনী কহিছে মাসী নাহি কর ভয়। করিবে গোপনে যাহে চির্দিন রয় ॥ তুমি আমি তিনি ভিন্ন অন্যে না জানিবে। যতনে নিশিতে ভারে গোপনে আনিবে॥

ভোমার বাটার কাছে আছে কালী বাজি।
ভথার আনিবে তাঁরে সাজাইরে নারী।।
পিতার আদেশে লরে যাবে সেই স্থানে।
তাহারে হেরিব আমি তারা সমিধানে।।
শুনিরে তাহার রূপ দহিছে অন্তর।
তেরিসে যুজার প্রাণ সেই গুণাকর।।
ধর্ম জানে তুমি জান চন্দ্র দিনমণি।
ধর্ম কানে তুমি জান চন্দ্র দিনমণি।
বিমলা বিদার হয়ে চলিল আলয়।
জুজনে ভাবে কথন হবে চংলোদর।।
রাজক্রক ভাবি কুক্ত পদে করি আশা।
রচিল প্রার ছব্দে শুনলিত ভাবা।।

কামিনীর কোটালগণের প্রতি আনেশ।
বিমলার প্রতি তবে কহিছে সুন্দরী।
ভাষার মহলে ভাছে হতেক প্রহরি।
ভাকিয়ে আনগো সবে আমার স্মৃতি।
ভাহারে নারীর বেশে আনিবে গোপনে।
ভূমি আমি ভিন্ন ইহা অন্য নাহি জানে।
ভাহায়ে ভারিগণ এল সন্নিধানে।।
ভূমিই হইয়া সবে নত করে শীর।
অবধান ঠাকুরাণী হজুরে হাজির।।
বিমলাকহিছে সবে কোটাল এসেছে।
কিবা আজা কর বাছা বাহিরে রয়েছে।।
কহিবে কোটালগণে আমার বচন।
করেছি সুর্ব্যের ব্রত হবে উজ্জাপন।।

क्मम कामिनी।

প্রতাহ যামিনীযোগে যাব কাননেতে। কভু না করিবে ব্যক্ত পিভার স্থানেতে।। আর এক আছে মনে করিব সাধনা। নাথ লাগি পুজিব গো করালবদনা।। দেখিত আমার ভাগ্যে করে কি না দয়া। ত্রিলোক তারিনী স্থারা শৈলেক্ত তন্মা। ঘতেক কোটালগণ রক্ষা করে পুরী। বিপালে ফেলনা মোরে করিয়া চাত্রী। ্ৰমান ঘটিৰে জেন শুনিলে রা**জ**ন। ভত্ত এব কৃষ্টি সাব্ধান স্ক্রিন।। পিতার কোপেতে নেখে। জায় না জীবন। र्श्वभा अहती भव कहिट्ड उथन।। करि आंभगात कार्या आंग यमि रात्र। তথাপি নারিব ব্যক্ত করিতে রাজায়।। আমরা ঘতেক আছি তব খানেকাদ। কি ত্বৰ স্বার হবে ঘটিলে প্রমাদ।। वाजकृष्ण भारत इति करूणा मानव। भीन शेरन रूपा कर ७११ छगांकर ॥

কুমদের রমনীর কপ ধারণ ও কামিনীর সহিত মিলন। ভোটক হন্দ। কুমদমোহনে সাজারে যতমে। রমনীর বেশ দিল ততকংগ।। বক্ষেতে কাচলী জাটিরে ভর্মনি।

मिन गांकादम तमशी छाटत धनी ।।

যুবরাজ চলে রাজহংস জিনি। রুস সাগর নাগর ৰূপ জিনি।। বসন পিতামরী শোভিছে অঞ্চে আসিছে মাতিয়ে মান্স তরকে।। চলে ধির ধিরে ভাবিয়ে কামিনী। সাজিয়ে কামিনী হেরিতে যামিনী।। তিন্যুণী ত্রিদেব বন্দিনী ভারা। यथा विवाकिक मीटन छःथ रहा ॥ সেই স্থানে উপনীত ধৈৰ্মা ধর ! অন্তরে মানলে ভাবে নিরস্তর।। ভূমি যদি দয়া কর মা অভয়া। পূর্ণ কর আশা পার্যাণ ভনয়।।। उशादन कामिनी धनी जादन मदन। क्रियान (इवित्र.क्रूयमायाहान।। হেনকালে তথা চলিল বিমলা। कृगदम बाधिश कटत नाना हला !! উপনীত নুপ বাবে গিয়ে ধনী। বলে চল হেরিবে সে গুণমণি॥ ভোমার ভাসমে আছে পথ চেয়ে। তাই আইলাম আমি পথ ধেয়ে।। যদি কর সাধ হেরিতে সে চাঁদ। চল চল পূৰ্ণ হৰে মন সাধ।। সাজারে রমণী ভাহারে যতনে। রাখিলে এসেছি কালির ভবনে।। বামিনী কহিছে মাসী চল চল। কেন্সনে হেরিব উপান্ন কি বল।।

काहादता विद्रास्य अथान मा त्रह । প্রাণ অহরহ অদর্শনে দহে।। या चारह ललां हो सहरव शम्हारह । চল যাই তথায় তোমার সাতে !! চলে ধনী রক্ষে মাভিয়ে ভরকে। কু মদে হেবিতে বিমলার সঙ্গে।। উপানীত যথা কুমদমোহন। शियांनी निकटि इटेन भिन्न ॥ গেরি**রে মাতিল ধনী করে** ধরি। ছলে ভুক্তনে ভুক্তনে ব্যঞ্জিরি॥ হাণিছে হাণিছে বচনে ভূষিছে। नगरन नगरन एकरन एपशिएह নুপ নক্ষমে কামিনী করে ধরি। কহিছে মিৰতি বছবিধ করি॥ ভূমি নাগর সাগর পণ্ডিত ছে। टिट्या मा जुलमा वाङ करवा ग ८ ।। निकहिन्न भाग (त्रर्थ। अनामीरतः। इन्त्री करत कत घरन व्यथीनीरत।। আমি ভোমারে কহি নূপ নক্ষন। চল চল নাথ মম নিকেতন।। करर कूगम कूमांत कांत्रिनीदत । বিভা নাহি হলো জায় পাত্র কিরে॥ তব ভনরারে যাও বাসে লিখে। कामिनौ कमनि शिल शिल दिस ॥ আমি জাপন কুমারে দিব বিদ্নে। চলিলাম ঘটকে ভেটিব গিয়ে॥

এইৰপে গুই জনে নিত্য নৰ রুসে। তানিকে করেন খেলা মজে প্রেম রুসে । করিয়া নারির বেশ কুমদমোহন। কামিনীর মন প্রাণ করিল হরণ॥ য়ত ছিল মন জুংখ গেল তুজনার। কৰ কি শে সহ কথা কহিতে জপার।। নুগের কুমারী ছিল চির বিরহিনী। নাগরে লইয়ে ওফে পোহার যাদিনী 🗅 বোন বাধা নাহি ভার কে পারে সন্ধান ! নার্টাতে নার্টাতে প্রেম কে জানে সন্ধান। काशियों कुयात हारम कहिर एथन। এখন উচিত নাথ প্রতিজ্ঞ। পালন।। क) इत्वा ५३८वा वार्क माहि वानि छत्। विচারে জিনিলে ব্যক্ত হবে প্রাণেশর।। আজি নাথ দিবাভাগে দেখেছি ভগনে। ক্রিয়া জামার পাশে পুরুষ রভনে।। জননী আসিয়া মোরে করিছে ভর্মন।। ভটস্থ হইরা উঠি হয়ে বিবসনা।। মাণতী কহিছে আদি ঘটেছে জঞাল। কুমদে কাটিতে আজা দিল মহীপাল।। তহি। শুনে ভয় পেয়ে করেছে প্রস্থান। এখন বাচাও প্রাণ কর স্বনুমান। অকুল সাগরে পড়ে আকুল অস্তরে। কালী কালী বলে আমি ডাকি উচ্চৈঃস্বরে 🖰

कुमन कामिनी।

গুনিরা আমার ধনী যত পুরবাদি।
উপনীত হল সবে মম বাসে আসি।।
কেহ বলে কেন ধনী করেছ রোদন।
কেহ বলে কেন হেরি বিরস বদন।।
নিদ্রা ভক্ত হলে দেখি কেহ নাছি কাছে।
কেবল বিশ্বা মাত্র সয়নেতে আছে।।
সেই কথা মনে হলে ভাবি হে অন্তরে।
অন্তরের ধন ভুমি যেওনা আন্তরে।।
নব নাগরে সাগরে কামিনী জামনি।
মন্তন মাতিরে দশনে দংশিছে ধনী।।
পুরা ভূমন কুত মানি আলিজন।
হেরে রাজক্লান্ড করে ভবানী শরেও।।

্নুমদ কামিনীর রহান্ত।

তক নিশি কুতুহলে, কুমদে কামিনী বলে,
প্রাণমাথ কর সত্য বাণী।
আছে বড় মন সাধ, পুরাও মনের সাধ,
তোমা বই জন্য নাহি জামি।।
ভূমি হে পর্যাধন, মম ধীবন যোলন,
তোমা বই কে আছে জগতে।
সদত বাসনা মনে, হেরি নরনে নরনে,
অদর্শনে থাকি চাহি পথে।।
যাবত ধরাতে রব, ভব দাসী হরে রব,
না মরিলে ভুলিতে নারিব।
শুন ওবে প্রাণেশ্বর, ভেবনা হে দেহান্তর,
ভাজিলে হে মরনে মরিব।।

ত্যকোনা ভুলনা বধু, নিমুলে খেওনা মধু, মন প্রাণ সঁপেছি তোমার। • यहि यां ७ कोन ऋत्त, त्य ७८६ को मात्र वत्त, অন্তরেতে হেরিয়ে তোমায়।। শুনিলে হে সেইক্ষণে, যাব আমি ভব সনে, লুকাইয়া জননী রাজনে। পুরুষ পরেশ মণি, রমণীর শিরোমণি, (दर्भ माथ (दर्भ (इ हदर्ग।। कुमन कहिरह धनी, जुमि गणि आमि करी, ভুলিতে নারিব হে তোখার। क) इटल (पर श्लब. प्यटम) में में शिंद यम. यमर्गात अझ कृत्व गांगा! কি ক্ষণে হেরেছি ধনী, পলকে প্রলম্ব গণি, না খেরিলে ভাসি নেত্র নীরে। হেরিলে হরিষ মন, বাসি হেরি সর্বল্ফ ।, কহি ধনী করে ভব কিরে।। ভোমারে যে ভাবি মনে, সে কি জানে অন্য জনে. তেজনা আমারে বিপ্রুখী। তুমি মম ধন প্রাণ, তুমি মম ধ্যান জ্ঞান, হেরিলে কাতর হুই ছু:খি । कहि खन विनिष्ति. श्रांक इटला श्रांतिनी, দেহ আজি আমারে বিদার। হলে অন্ত দীনমণি, আবিত পুনঃ তথনি, রাজক্ষক কহিছে ভাবার ॥

कुमन कामिनी।

কামিনীর কুমদের সহিত রহাক। কুমদের করে ধরি লুপের কুমারী। কহিছেন প্রাণনাথ জিদার দিতে নারি।। পলকে প্রলয় জ্ঞান তব অদর্শনে। আর এক কথা বলি থাকিবে গোপনে॥ একথা না বাক্ত ভূমি করো কোন স্থানে। দিব। ভাগে তুমি নিত্য থেকো <mark>সাবধানে।।</mark> প্রকাশ হইলে কিন্তু যাইবে জীবন। ত্যত্ত্বকহি সাবধান সর্বক্ষণ।। গুনিয়া কুমন কর গুন প্রাণেশ্বরী। कम् न। इटेंदा शङ ब्लन्स्ल। सून्धती ॥ তাহা আমি ভালো জানি বিশেব মতেতে। मा १८व मा १८व वास्य बामिएव ११८५८७॥ किस वाभि मह्य जन बाह्र कांत्रल। পাছে মাগি বাজ করে কাহার ভবনে।। মষ্ট লোকের মষ্ট রীত শান্ত্রের কথা। পুরাণ প্রসংক্ষতে দেখ হথায় তথা ৷৷ গ্ৰন্থৰ চলিলেন কুমনমোহন। বাদায় আদিয়া হলো উদয় তপন।। প্রাতঃকৃত্য আদি দারি মান পুদা করি। রদ্ধন করিতে জান নববস্ত্র পরি।। পরেতে ভোজন করে স্কংখ যুবরায় ৷ আসিয়া বিমলা ধনী ভাদ্বল যোগায়।। भौड स्थांश कदिया भरा। कटतम मधन। বিমলা আপন কার্যো করিল গমন ॥

পরে নিজা হতে উঠি নৃপের ভনশ !
ভাবেন কথন হবে শশির উদয়।।
কেমনে হেরিব আমি ক্লে বিধুবদনী।
কভক্ষণে হবে অস্ত আজি দিনমনি।।
সেই এথ হেরি আমি সম্মনে সপনে।
সাচত বসনা হেরি নম্মনে নম্মনে।
এইরণে ভেবে কত কুমদমোহন।
নগর ভ্রমণে স্থাবে করেন গমন।।
গ্রাক্তর্যুক্ত কুছে প্রিটিয়া প্রার্।
কুমদমোহন রাথ কি ভয় তোমার।

দ্বদ কামিনীর বিহার আরত।
ভৌতক হল।
আজি জানিব নাগর সাগর হে।
হাহিশান্তে কেমন পণ্ডিত হে।।
দেখিব আমার কেমন সৈনা হে।
পারে কি না পারে রণে জিনিতে হে।।
রস দাগর নাগর করে ধরে।
কহিছে জানিব আজিলো সমরে।।
হারিলে হারিব যভেক ভূষণ।
করি রণে পর্ণ নূপের নন্দন।
আরন্তিল ছই জনে কামরণ।।
হানিল মদন কুমদমোহনে।
পঞ্ষার ভার কদের যতনে।।

कुषण कामिनी।

কামিনী অমনি বাধে ভুজ পালে। कुमन धनीरत रकतन काम कारम ।। মুখ চুম্ব করে যতনে ধনী। ষন ঘন নিতায় আঘাত ধনী।। অপেনি কামিনী হারিল সমরে। কুমদমেহিন ভবে ব্যক্ত করে।। एन ला कुम्पत्री एक ला कक्षण। न्यू दो गांश भूनः कतिएक त्रणा। তে সম উচিত করলো এখনি। দেখলো চাহিয়া নাহিফ রঞ্জনী।। कथाम कथाम नाना उक तरम। কতু উঠে রসরাব্দ কতু বসে।। श्रामिट्ड (थलिट्ड नागरी नागटत । শাশবর গেল অন্ত গিরিপরে॥ ব্যানে না ঘটনা কি ঘটিবে পরে। ছজনে গাডিয়া প্রেম রস ভরে॥ উদিত ভাক্তর প্রভাব কামিনী। গ্ৰমাৰ মনেতে গণিছে কামিনী।। কেলনে রাখিব ভোমারে যভনে। नाथ दर यदि दर इकान कीवरन।। ভূমি পণ্ডিত হে বল মার্কি করি। করহে উপায় এবে কিসে ভরি॥ অমি প্রাণেমরি তাহে কভি নাই। তোমার কারণে গদত ভরাই।। আসিবে বননী দেখিবে অমনি। স্থামি নাথ প্রাণ তাজিব তথনি।।

गृहित्क मातिन शानि नित्व माति ।
जामि थाकिन नेधु मततम माति ॥
रिक् ति जामिमी अछांक रहेता ।
स्व नित्रा भरत मकत्के कितिता॥
जाति हरत हिलाम सूथ-मागति ।
तम कत्म এथन नाम यानि यति ॥
कम्म कामात नेतु हर शक्ति मिल् ॥
मिक्राल भितीत्क माहि थात्क काम ।
जातिया कि काथ गिर्मि कान्याम ॥
करह भक्ते बाक्रक्ष छोंके हर ।
छभाष कि कर तम्मागत हर ॥

কানিনীর জাকেপ।
প্রভাতে উঠিয়া ধনী গণিতে প্রমাদ।
হায় বিধি একি হেরি হরিবে বিসাদ।
কেমনে জননী পাশে সহিব গঞ্জনা।
কিজরীরে রূপা কর করালবদনা।।
প্রমোদার প্রাণ যায় করি কি উপায়।
কাতরে বিপদে মোরে তুমি রাঝ পায়।
বছাক্ষে গুণনিধি দিয়াছিলে মোরে।
৬ংহি ভারা ছংব হরা পুনং নিলে হরে।।
এখন আমার ভাগ্যে ঘটেছে অঞ্জাল।
হর ছংব পঞ্চ মুখ তুমি মহাকাল।।
পিতার কোপেতে আজি যায় হে জীবন।
কোথা হে পাশুব নাধ শীমধুস্বদন।।

क्मन कामिनी।

লাজে মরি সাদা ভরি কি হবে ছর্গতি। লক্ষা রাধ দীননাথ অথিলের পতি।। नित्व शांनि मूदथं कानि यञ शृंतवांनि । एक ना विभाग इति नाम इन्थे चानि ॥ পড়েছি অকুলে এবে ভেবে প্রাণ যার। দীনবকু রূপাময় বাঁচাও আমায়।। না বুৰো করেছি কাষ এখন কি হবে! পুণ একা সনাতন সামুক্ল হতে।। কং নাথ আননাথ রুমের সংগর। ্কখনে যাইবে নাথ বল স্থানাম্ভর।। ছারেছে প্রহরি গণ আছে কত জনা। फिनटन मातिरद स्पर्क **माबित्रा अ**ऋगा॥ মহীপাল **তুলা কাল শুন হে** রাজন। ক্ৰথের হেন্দু নাথ পাত্র মিক্স গণ !! হার বিধি ভূমি বাদি কেলিলে বিপথে। হারালে ভোমারে নাথ কি কাম সম্পরে ।; ভ্ৰিম্মধন প্ৰাণ ভ্ৰমি হে নকলি ; তাল মক্ত ভোমাবই আর কারে বলি 🕦 দেখিলে ভোমার ছঃখ ত্যাজিব জীবন। তোনার মরণে নাথ আমার মরণ।। তোমার সুখেতে আমি ছিন্ন বড় সুখী। ভোমার লাগিয়া ভেবে হয়েছি অসুখী। হেরিতে তোমার হাঁসি সদা ভাল বাসি। আণের সহিত ৰাখ এছা ভাল বাসি॥ শিয়রে শখন ভুলা হেরি যে ঘটনা। কেমনে হইব পার উপায় বলনা।

জনক নামেতে দাসী হল উপনীত।
কুমদে হৈরিয়া ধনী ভাবে চমকিত।।
মনে মনে ভাবে ধনী এ আর কেমন।
পক প্রবেশিতে নারে হাহার ভবন।।
কেমনে আইল হেথা করে কি উপায়।
একথা কহিলে গিয়া রাণিরে রাজায়।।
গাশ্চাতে হাইবে প্রাণ শুনিলে ভূপাল।
এবে হাই চলে আগে কহিতে এহাল।
ভাবিয়া গ্রীকৃষ্ণ পদ রাহুকৃষ্ণ ভনে।
ধনকম্প্রেরী চলে নৃপের সদনে।।

ভনক মৃঞ্জরির বালীর নিকটে গনন।
ভনক মৃঞ্জরী ধনী ঢালল তথনি।
উপানীত হলো থথা নৃপের রমণী।
কর্যোড়ে কর গিরা নবিশেষ বাণী।
নিবেদন ভারধান কর মাগোরাণী।।
কহিবারে বাদি লাজ না কহিলে নয়।
কোন ভ্রি নহি ভামি দিও পদাশ্রয়।।
ঘটেছে প্রমাদ বড় তব ভনরার:
ভূজনে মরিল আজি কোপেতে রাজার।।
ভূবনমোহন এক নবীন নাগর।
রহেছে মহিষী ভার গৃহের ভিতর।।
ভাহারে লইন্নে রক্ষে আছেন স্কুন্দরী।
কহিবারে আইলাম খীর মনে ভরি।।
সভ্য কিবা মিখ্যা ইহা চল গো দেখিবে।
মিখ্যা যদি হয় ভবে প্রতিকল দিবে।।

क्रमकामिनी।

আমি গোভোমার দাসী হিত অভিলাষী। প্ৰমাদ ঘটনা দেখি কহিলাম আসি।। কি করে কেমনে এলে। অন্দর মহলে। ভাবিরা না পাই টের ভাবি নেত্র জলে।। मलिएक मानकी त्य त्था आदह कृत्रे नागी। অনংগ্র হেডু ভারা ছই পুণ্য নাশি।। লক্ষ লক্ষ কৰে যার রক্ষা করে পুরী। ভার্ণর **অন্দরে** চুরি করিয়া চাতুরী।। কেমন প্রছরিগণ কেমন কোটাল। মরিবে পরাণে সবে শুমিলে ভূপাল।। শুনিয়া দাসীর বাণী মহিঘী তথা। পোপনে আছালে থাকি করে নিরক্ষণ।। হেরিয়ে ফোপেতে ধলি ভাবিমে অন্তরে। পাঠান দাদীরে ভাকিবারে নুপবরে॥ অনক্রমঞ্জরী গিয়া মত করে শির। ८५थिया धनीदत हारि जिक्हारमन धीत।। অনক্ষ মুঞ্জরী কও কিলের কারনে। কি লাগিয়া দাড়াইয়া আমার সদলে।। অবধান ক্ষিতিনাথ অধিনীর বাণী। মোরে পাঠালেন তব আছে মহারাণী।। বারেক অন্দরে যাত্রা করণ রাজন। মোরে পাঠালেন হেথা ভাহারি কারণ !! विलिय महत्र अस्तर महत्य। উপনীত সহিধীর পাশে কুতুহলে॥ রাজকুক ভাবি কুক রচিল পরার। ভরদা কেবল ছরি চরণ ভোমার।।

कूमम कामिनी।

পরার |

ন্মাহিধীর রাজার প্রতি ভৎ সনা। ক্রতে কোটালগণ নিকটে হাজির। আংদশে কোটালগণে আনায় নাজির।। ান ওহে রাজোশর কব কি কৌতুক। যাও নাথ দেখ গিয়া জামভার মুগ।। নাছি দিলে কামিনীর বিভা হে রাজন। কলক্ষে পুরিল র জ। কি কর এখন।। ক্ত নুপসূত এলে। বিভা করিবারে। কেন নাহি দিলে বিভা কি কাম বিচারে।। এখন হইল ভাল বদৰ উচ্ছল। ছোমার বি দোব মম মরণ মঞ্ল । আইবড় সুহা বাশে বিভা নাহি দিলে। काभिनीत शादानाथ हाएस ना स्विर्ध । रयमन कृतिरम कृष्य প্রতিকৃপ ভার। शर्त धर्त इटला नाथ दगण बारुकार ॥ थेन (क्यान कट्ड (प्रश्रीत विका । উত্ব শীর হল হেট নৃপ হে এখন 🛚 নিম্বলম্ব কুলে কালি দিলে হে কুমারী। কেমন প্রহরিগণ বর্ণিবারে নারি।। लक लक सदम यांत तक।कदा भूती। কি কৰ্ব অধিক ভার অন্দরেতে চুরি।। কেমন কোটাল তব প্রহরি সকল। পেট মোটা খুলে খার ভক্রের দল।। শুনিয়া রাণীর বাণী ক্রোধেতে রাজন। ভন্নণ অকুণ ভূল্য হলো সুলোচন ।

कुमक का जिली।

নাজিরে ডাকিরে রাদ্ধ কল স্বিশেষ।
কর হে কোটালগণে নিকটে হাজির।
আদেশে কোটালগণে আনরে নাজির।
আহিশেল থেন কাল কোখেতে কাঁপিছে।
পাছকার চোটে কার প্রাণ বা কাটিছে।।
লাথি চর কিল কার বক্ষেতে পাঘাণ।
খার থেয়ে কেহ বলে যার যার প্রাণ।।
আমার অন্দরে চুরি নিমক হালাল।
চোর ধরে এনে সবে খুচাও জঞ্জাল।।
কামিনীর লালে ছোর আছে লুকাইরা।
ভুরিত আনরে চোরে করে রক্জু নিরা।।
হে পাই রাজভ্বক রচিরে পরার।
ভরনা কেবল হরি চরণ ডোমার।।

কামিনীর প্রতি মহিনীর ভৎ সনা।
ওলো কুল কলন্থিনী, কেন হরে নিসন্ধিনী,
গোপনেতে করিলি এ কায়।
করি গরল ভক্ষণ, ছিল মঙ্গল মরণ,
মহারান্ধে শেবে দিলি লাজ।
ওলো কালা মুখী, হলি চির দিন ছংখী,
ধিক ধিক ভোরে পূর্ণ নাশি।
হরে আমার ছহিভা, হলি চোরের বনিতা,
ভোরে শিখাইবে নূপ আশি।
এই আমার প্রিভে, নারে পক্ষ প্রবেশিতে,
ভারে আনিলি কেমন করে।

क्रिन (मार्त ना कहिलि, भिरंष जार्शन मिलि, এখন সে জন প্রাণে মরে।। তামার কি হবে গভি, কিবা করে নরপতি, ভার ক্রোধে হারাবে জীবন। ছিল বড় মনে সাধ, বিভাদিব করে সাধ, त्म माध इहेल खकांत्र।।। চুই দাসীরে কহিছে, রাণী জোখেতে অলিছে, ভোৱা ভোৱে রংক্ষের রক্ষিণী। वल हेरांत कारिनी, अत्य क्याम कारिनी, আ্ৰিড লো প্ৰত্যং যামিনী।। करर मानी कृष्टे खटन, अंकि विनन्न वहरन, এর কহি শুন বিবরণ। ঘবে ঐ গুণাকর, আদিল তব নগর, মোরা আলো দেখিতু তথ্য।। भर स्नाम मागदत, (मरथहिलू में नागदत, বশে থাকিতে গো ভক্ততলে! #ই মাত্র মোরা জানি, বিচার কর মা রাণী, वादम हदन याहे निमि इदन।। কাহ ইহার কাহিনী, জানে বিমলা ভাঁতিনী, নিত্য আসিত যামিনী কালে। মোরা ছড়ি গো কহিতে, সাসা উহার বাটাতে, শুনি রাণী কংখন ভূপালে।। শুন হে পুণ্যের সেজু, বিমলা ইহার হেজু, তাহারে আনিলে হেথা ভূপ। পাইবে সব সন্ধান, জানিবে কার সন্ধান, সে জানে নাথ বিশেষ ৰূপ।।

कूमन कामिनी।

কবি রাজক্ষ কর, কোখা হরি দরামর,
দীননাথ দীনে কুপা কর।
ভূমি সংগারের গার, জগভের মূলাধার,
দরামর বাঞ্চা পূর্ণ কর।।

রাজার কোটালগণের প্রতি জাদেশ। পরার।

ভূপের আদেশে সাজে যতেক কোটাল। করে নিল নানা অন্ত ঢাল ভরোহাল।। কেটালের পদভরে কাঁপিছে নগর। চোর ধরিবারে বার জন্মর ভিতর।। চলিল কোটালগণ কামিনীর বাবে। দেখিল কুমদ রাষ্ট্রে কামিনীর পাশে।। ক্রমাদরে গিয়ে ভার ধরিকেক করে। राधितः युगन कदत नत्र यात्र धरत। কেহ মারে গাতে ছরি কেহ মারে চড়। कुमम्द्रमाह्न खाँद्व इहेद्य काँक्त ॥ एगत धति वर्षेत्र शिव नाकित महरम । নাজির হাজির করে নৃপের সদনে।। হলো মহা কোলাহল কান্তিপ নগরে। কুমদ কামিনীরে ভাবিছেন অস্তরে।। নাজির কহিছে চোর কোথার আলয়। কিবা নাম হয় ভোর কাহার তনয়।। কোথার এখানে বাসা কাহার ভবনে। কিবা ছাত্তি ৰল ৰেটা থাকিশ কল্পনে।।

क्मम क मिनी।

জাননা কাহার বাটা মনে নাহি ভর। বামন হয়ে চাও ধরিছে শশধর।। • গ্লাম বলে মহাশ্র মন নাহি স্থির। হৃদয়েতে হেরি সদা কপ কামিনীর।। সে আমাৰ মন প্ৰাণ শুধাংশু বদনী। অবিরত বাসে চিত হেরিতে সে ধনী॥ রাজা বলে ছাড বেটা মরিবি এখনি। ৰিচারিয়ে কর ডগু ভূমি নুপমণি॥ সুরাট নগঙে বাস কহি পরিচয়। সুরেশ্চন্দ্র নুপতির জামি গো জনয়॥ বন্ধুর বিচ্ছেদে আমি হইয়ে কাভর। তেজে বাস করি বাস কানন ভিডর ॥ বছ ভাগ্যে হেরি তথা এক যোগিবরে। নিরবধি থাকে সেই কানন ভিতরে।। ভাহার মুখেতে শুনি তোমার কাহিনী। বিচারে পণ্ডিত বড় তোমার নন্দিনী।। বাসা আমার বিমলা ভাঁতিনীর বাসে। সেই মোরে মজাইল কেলে এই ফাঁলে ॥ রার বলে মর বেটা বড়ই সুজন। কিছুই জানমা ভূমি নৃপের নক্ষন।। চুরি করে কাটো কাল ওহে কুলাজার। কোথায় কোটালগণ কররে সংহার।। ব্দাঁখি ঠেরে কোষ্টালেরে মানা করে রাম। ধাকা দিরা ভারি কারাগারে লবে বার।। দেখিয়ে কুমদের গতি ভেবে আশাস। রাজহ্বক ভাবি হুক করিল প্রকাশ।।

কুমদ কামিনী ⁴ কামিনীর আক্ষেপ । পরার।

अकारन क्षत्र अकि रहरत क्षारन महि। (कन मधी अञ्च हत्वा वन विकारति।। কিসেরি কারবে ধরা হয়েছে অধরা। কাহার নেত্রের মলে ভাষিতেহে ধরা।। ভাবি বৃক্তি নিশাকর পড়েছেন ধরা। कूमिनी करत रकन रहित सभी यहा।। সেই ভরে প্রস্থান করেছে সুধাকর। তাহার কারণে হলো উদর ভাকর।। ধিকরে জামিনী জামি বলিরে ভোমারে। कृमि य स्कार मम नाति वर्णिवादत ॥ কি দোযে করিলে ক্রোধ স্বাধার উপরে। क्रिक्ट्रक्टूब्राहेल कनव-गांत्रतः॥ সংখ না সহৈ না ছঃধ বাজিছে যাভনা। সদয়ের ধন জার সহেনা হাতনা।। প্রেম সুখ ভক্তৰরে প্রেমকল আন্দ। गठत्रक क्रि (थला मत्नित उद्घारम्॥ তাহাতে বিপক্ষ নূপ হইল রক্ষী। নিশাকর মৃদ্ধিবর হরে দিনমণি।। विटक्ष विशाम छात्र हिन हुई कति। क्तक क्रम धरे भारम इहे कति॥ नाक्ष्मा शक्षमा हुई चारांत जुतक। अके पृष्ठ अके ठात्रा कृतित्तक तक ॥ খানন্দ নৃপত্তি মুমু ছিলেন খানন্দ। विटक्त माचक सामि कटन निवानक।।

কুমদ কামিনী।

বৈষ্যা মৃদ্ধি ছিল বলে পরমাকৌভুকে। यदा रण करत यल खायाहरनम छः 😢 🛚 মন প্রাণ চুই করি ছিল মন রকে। প্রাণেশ্বরের কভিরে পলায় জাতকে।। বুগল নেত্র যুগল ভুরক্স স্থামার। বুগল ভুরঞ্ আসি বিপক্ষ জনার।। জন্ম অঙ্গ অন্ত ৰড়ে বছ কট পার। ভূই ভরি ছুই ভন্ন ছুরঞ্জ মঞ্জায়।। गरी भाग मुखितत आति छुँ साम। কারাবদ্ধ করে রাখে তাপিত রাজনে। থাহার কিন্তিতে মাত হইল প্রভাত। কামিনী দাহিছে বলে শিরে দিয়ে হাত।। প্রাণনাথে ধরিলেক জমাদার করে। ভাখা দেখি কামিনীর হৃদয় বিদরে।। অননী জাসিয়ে কত দিতেছে গঞ্জন। আছে মুহ্মানে বলি সুধাংশু বদনা॥ জীবন হৌবন ধন যে জন আমার। পারে বেড়ি গাত্রে দড়ি মারিছে ভাহার।। কেমনে হেরিব বল তাহার তুর্গতি। দ্বিগুণ বচন স্থালা দিতেছে নুপতি॥ এ ছঃথ কহিব কায় খেদে প্রাণ যায়। আমার বোবার অপ্র ব্যক্ত করা দার।। কভ লোকে বিভা করে কেবা মারে কারে। কেবা যার ভারে যল রাথে কারাগারে।। রাম। গণ কর ধনী আহা মরি মরি। কেম্বে বোণার অঙ্গে মারিভেছে ছড়ি।।

পাদে বেজি করে দিন্ত দিয়াছে কেমনে।

নহেনা উহার ছঃখ সহেনা জীবনে।।

আমরা পরের ছঃখ সহিতে না পারি।

নাসে মন ডরে লঙ্কে ঘাই বাস ছাড়ি॥

মহীপাল পুণ্য কাল করিছে গর্জান।

তাহার কারণে তার সজল লোচন॥

মন ছঃখে হেট মুখে রমেছেন রায়।

মলীন চন্দ্রাল ধেন দীন হীন প্রায়॥

সাবাসি পিরীত কোর কি কব কৌতুক।

তুমি হে সকলে পার দিতে সুখ ছঃখ॥

রূপা কর ক্কেচ্ছে য়াশহে চরণে।

পায়ার প্রবিজ্ঞে রাজর্ভ ঘোর ভনে।।

কামিনীর বিলাপ ও কুমদের চোর ধর।

আক্ষেপ উক্তি পথার।

কুমদ পড়িল ধরা, কুমদ পড়িল ধরা,

তাহা দেখি কামিনীরে নাহি ধার ধরা।
ধনী করিছে রোদন,

নাথের দেখিয়া গতি করিছে রোদন।
হার একি হলো দার, হার একি হলো দার,
ভাহার লাগিয়া মম ভেবে প্রাণ বার।
আর সহেনা যাতনা, আর সহেনা যাতনা,

সহেনা আমার প্রাণে ভাহার যাতনা।
আমি ত্যজিব এ প্রাণ, আমি ভ্যজিব এ প্রাণ,

শে আমার জান্ধি হার সে আমার প্রাণ।

कुमन कामिनी।

বল করি কি উপায়, বল করি কি উপায়, ভাহার বিরহে মম ভেবে-প্রাণ বার। दक्षा देवरण वनमञ्, दकाषा देवरण वनमञ्, क मात्रीदृत (पथा मांख करण क नमत्र। ভূমি গুণের সাগর, তুমি গুণের সাগর, ভোমা বিনে কেই নাহি অধিল ভিডর। मन देधतुं का ना धटत, मन देधतुं का धटतः ভাষার লাগিয়া আণু সমত বিদরে। ममा हरक बर्ध जीव, जमा हरक वर्ध में है. ভাহার বিচ্ছেদে প্রাণ সমত অন্ধির। আমি নারি যে সহিতে, আমি নারি যে সহিতে, আরু মল মল নারে বালে থে রহিছে। नम् ब्राट्ट मन्द्राला, नम् अरल मन्द्रिन -কান্ত বিহনে আখার ফে করে শীতল। আমি ভাহার উদ্দেশে, আমি ভাহার উদ্দেশে, তেকে বাদ সমোতঃখে যাব জন্য দেশে। (स्रोत सद्भ प्रकल्, स्रोत स्वर्भ स्कर्णः त्राबक्षक करर शरी भद्रन मक्ता।

চোরের রাজ সভায় কথোপ কথন।
পাত্র নিজ গণ কয় মৃপের সদন।
ভামভাবে বুঝি চোর মৃপের নন্দন।
বাক্যের ছটায় জ্ঞান হয় জ্ঞানবাণ।
নৃপের ভনয় হবে হয় জনুমান।
ভানিয়া স্বার বাণী কহেন মৃপতি।
চোরে জানিবারে পুনঃ কর জনুমতি।

কুমদ কামিনী।

আজা মাত্র চোরে আনিল কোটাল গণে। जिळारमन महीशास क्यमरमाहरन।। সভ্য করি বল বেটা কোথায় আলয়। কীবা কাভি কার বেটাকিবা নাম হয়।। ক্রোথা হতে এলি হেথা ছিলি কোন স্থানে। প্রকাশ করিয়া কহ মম সন্নিধানে।। ভূমি যে **নৃপে**র সুভ জানিব কেসনে। নকর কীন্ধর কৈবা আছে তোর সনে।। কভ দিন ছিলি ভুই কানন ভিতর। ্কাথায় আহেছন ভোর দেখা যোগীবর।। সভা যদি ভূমি ভারে না পারে। দেখাভে। ্ডামার হইবে মৃত্যু কেটোলের হাতে।। ্দখাতে পাধিলে তোৱে কিছু না বলৈব। জানিলে বিশেষ ভোৱ ভোৱে ছেভে দিব।। বাঁচিবার জাশা যদি কর বাছাবন ৷ প্রকাশ করিয়া কহ ভাগোর সদন।। বিষলার বাটীতে কি সকা ভোর বাদ।। বধিন তথনি তোরে করিলে তামাশা॥ রায় বলে কিভি নাথ ভূমি দহাময়। বধিলে বধিতে পার ভূমি মহাশ্র। जूमि यनि कत पद्मा ज्या वाहि आहर। কামিনীর ৰূপ হেরি জামি ব্যানে জ্ঞানে।। শুনিলে আমার মৃত্যু সে ত্যক্তিৰে প্রাণ। লে জামার আমি ভার দে আমার প্রাণা: শুনিয়া দ্বিশুণ দ্বলে কাস্থিপের পতি। আনরে বেটার মাধা কটি শীঘগতি॥

कुमन कामिनी।

মরিলে জুড়াবে প্রাণ দে মম মঙ্গল।
ভারে না পাইলে মোর মরণ মঙ্গল।
বিচার করিয়া দও কর নৃপাসণি।
ভাসারে বধিলে বিস্তু মরিকে দে ধনী।।
ইয়া বুঝে কর কায ভুমি মহীপাল।
কাটিলে জামারে তব ঘটবে জঞ্জাল।।
নৃপ বলে গুরে বেটা নাহি চিতে গুরু।
কিঞ্জিৎ পরেতে দেখ কিবা শান্তি হয়।।
রাজরুঝ ভাবি রুফ রচিল প্রার!
তুমদমোহন রাম্ন কি ভর ভোমার।।
পিরীতি করিজে গেলে সব সৈতে হয়।

বিম্থারে রাজসভায় আদিতে রাজ্যর আদেশে ও কোটালগণের গ্রমন। জিপানী।

নূপের আনেশ পেরে, চলে সবে জেড হরে,
বিসলারে আনিতে কোটাল।
উপনীত তার বাসে, নগর ঘেরি চারি পাশে,
নানামতে দের গালাগাল।।
যত তবা ছিল তার, নিল আদেশে রাজার,
বিমলার কি কব প্রগতি।
রামা বলে একি নার, নিখাইব কহে রায়,
চল বাব যথায় নূপতি।।
কোন দোবে ছবি নই, মিথাা কথা নাহি কই,

কেন সোরে কহ কুবতন।

কুমদ কামিনী।

હरत शंखानि कुडेनी, किছूर बानमा धर्मी. हल कार्श मुर्लात गम्म।। घटत बाल। मित्रा काटत, कथा कं श्रुनः व्यादत, লক্ষা নাই তোর পূর্ণ নাশি। নুপের অন্ধরে চুরি, এ সব তোর চাতুরী, যার কোষ ভোরে দিলে ফাঁসি।। আমি থাকি একাকিনী, নাহি আমার মন্দিনী, কার করিত্ব কুটুনীপণা। कांत्र क्रूड़। वधु कांद्रत. फिल्लू भिलादम काशांद्रत. यस आदि। भट्टना श्रांकना ॥ গালি দিলি বলে শালি, সোর মুখে দিব কালী, काको यणि इन माञ्चक । थेटन यदिन ट्यांत सूर्य, भूटत मारिन सम छःथ, ভুমি ভারা সকলের স্কুল।। রক্ষে কর এ দানীরে, সাস্থি কর মূপছিরে, मञ्जा मा यात्र ला कीवन। আবোডে ভাবিলে মনে, বহিবে না যে গোগনে উপায় কি করি গো এথন।। ধিরিয়া যাগির কেলে, লাখি চর মায়ে লেখে, लटन योत्र तांकांत नमटन। विभना जानिन भरन, थरतदई वृक्ति तम जरन, নৈলে কেন আসিতে ভবনে।। ना दूरवा करति है कांग, दरभ वृत्ति बहातास, প্রাণ যার জাজি পর দার। कुष्यान कदिन सूर्य, व्यक्ति व्यक्तिय क्रांच. ় এ ছঃধ কহিব আমি কায়।।

कुमन कामिनी।

মরিলে জুড়াবে প্রাণ দে মম মঞ্চল।
ভারে না পাইলে মোর মরণ মঞ্চল।।
বিচার করিরা দণ্ড কর মূপমণি।
আমারে বধিলে কিন্তু মরিবে লে ধনী।।
ইহা বুঝে কর কায তুমি মহীপাল।
কাটিলে আমারে তব ঘটবে জঞ্চাল।।
নূপ বলে গুরে বেটা নাহি চিতে অয়।
কিঞ্চিৎ পরেতে দেখ কিবা শান্তি হয়।।
রাজক্ষ ভাবি কৃষ্ণ রচিল পরার।
কুমদমোহন রায় কি ভর ভোমার।।
পারীতি করিতে গেলে বব বৈতে হয়।
পাইবে কামিনী তুমি ভোমার কি ভয়।

বিমলারে রাজসভায় জানিতে রাজার জাদেশে ও কোটালগণের গমন। ত্রিপদী।

নৃপের আদেশ পেরে, চলে সবৈ ক্রত হরে,
বিমলারে আনিতে কোটাল।
উপনীত তার কাসে, নগর ঘেরি চারি পাশে,
নানানতে দের গালাগাল।।
যত তব্য ছিল তার, নিল আদেশে রাজার,
বিমলার কি কব হুগতি।
বাসা বলে একি দার, শিখাইব কহে রায়,

চল বাব হথায় নৃপতি।। কোন দোবে ছবি নই, মিথা। কথা নাহি কই, কেন কোনে কহ কুৰকন।

खरत शंखानि कुछेनी, किंदूरे बानमा पनी-वन कारभ नुरक्षत्र जमन।। ঘরে বাসা দিয়া চোরে, কথা কও পুনঃ ঘোরে, লজ্ঞা নাই তোর পূর্ণ নাশি। লুপের অব্দরে চুরি, এ সব তোর চাতুরী, যায় ক্রোব ভোরে দিলে ফাসি॥ আমি থাকি একাকিনী, নাছি আমার নদ্দিনী, কার করিত্ব কুটুনীপণা। कांत कुछ। वधु कांद्र, पिसू मिलारम काहादत. যম প্রাণে পহেনা যাতনা।। भानि मिनि वरन भानि, छात्र मूरथ मिन काली, कानी यगि इन मासूकून। र्थटन सरिव ट्यांत सूर्थ, जुटत सरिव भम छःथ, ভূমি ভারা সকলের সুল।। রক্ষে কর এ দাসীরে, শান্তি কর মূপভিরে, নতুবা মা যার গো জীবন। আগেতে ভাবিলে মনে, রহিবে না যে গোপনে উপায় কি করি গো এখন।। ধরিয়া মাগির কেশে, লাখি চর মারে শেষে. लदत्र यात्र ताब्दात नपटन। विभना कामिन भरन, श्रत्रद्ध वृक्ति रम करन, रेम्हा क्व यात्रिक स्वत्य ॥ मा युरक करत्रक्टि कांग, वर्ष वृक्षि भराताज, - প্রোণ যান্ধ জাজি পর দার। कुकरन कदिन सूच, यहिन अंदर्भन हुःच,

व शृःध कदिव शांकि कात्र।।

যাহা করেছিল মনে, এবে তা হেরি নয়নে,
ধন প্রাণে মজিলু এবার।
হার বিধি তুমি বাদী, হরেছি হে অপরাধী,
কুপা করে কর হে উদ্ধার।।
ঠেকেছি বিষম দার, এবে ভাবি প্রাণ যার,
কুপামর হরি কুপা কর।
রাজা কিবা করে দণ্ড, বুঝি করে প্রাণ দণ্ড,
ভরে প্রাণ হলো তুর ভর।।

বিমলারে লৈয়া কোটালগণের রাজসভার উপনীত।

পরার।

বিমলাবে আনিলেক নূপের সভার।
হেট মূথে কোপ দুফে চেমে দেখে রার।।
জিজ্ঞাসেন মহীপাল কহরে ভাঁতিনী।
কি জানিস তুই বেটা চোরের কাহিনী।।
তোর বানেতে কিরে সভ্য চোরের বাসা।।
সভ্য বল কর যদি বাঁচিবার আশা।।
কোথার উহার বাস থাকে যন্ত জনে।
চুরি করে কত দ্রব্য রেখেছে ভবনে।।
কার বেটা কিবা নাম কিবা জাতি হর।
সত্য করি কহ মোরে তার পরিচয়।।
বিমলা কহিছে তুমি ধর্ম অবতার।
চোরের যা জানি কহি ছজুরে তোমার।।
শুনেছি উহার মুখে শুন হে রাজন।
সুরাট নামেতে রাজ্য ভথার ভবন।।

कुमम कामिनी।

कुमनरमाहम नीम नुरश्त कन्त्र। মম বাদে বাদা ওর আত্মি আত্মিকর।। সুরেশচন্দ্র নূপের উনি হে সন্দর। এই মাত্র মহীপাল জানি বিবরণ।। তৰ্জন গৰ্জনে রায় কহিছে কসিয়া। কোথারে কোটাল রাখ কারাগারে নিয়া ।। ভিহার বুকেভে দেহ চাপারে পাবাণ। আজি কুটনীরে ভোর বধিব পরাণ।। কামিনীর বাবে চুরি ভোমার ঘটনা। তোমায়ে কাটিলে সম পুরে যে বাসনা।। চোরেরে কেমন করে আনিলি যাসেতে। ভার প্রতিফল আজি দিব বিশেষেতে।। क्यान कतिनि कांच भारत नाहि छन्न। বল বেটা কেব। তোরে দিয়াছে আশ্রর ।। कुमन करिष्ट चात्रि महिना गाउना। ভূমি তো ইহার হেডু যেনে কি জাননা॥ আমার আমি গো তুমি কামিনীর যাসী। মিলাইরা দিলে মোরে হইরা হিভাশী॥ ভোমার কারণে মোর নাম হৈল চোর। চিতে মাহি বাস ডর পুন: কর জোর।। নিত্য নিশিতে আমার সাঞ্চারে রমণী। কামিনীর বাসে লয়ে যেতে ভূমি ধনী॥ এখন আমার প্রাণ চাহে যে ভাহারে। मा (श्टब रहे शाहे हु: ब कामाहेव कादत ।। विभवा कहिएह त्कार्य नका नाहि छात्र। यात्र मानि कति চूर्ति (गहे बटन होत्र।।

রাজকৃষ্ণ করে পথ্ট শুনলো ভাঁতিনী। আমিত জানি রে ধনী তোমার কাহিনী।।

কুমদের রাজার নিকটে আক্রেপ। আক্ষেপ উক্তি পয়ার। কহি শুন মহারাজ. ্ কহি শুন মহারাজ, ক্ষেমা কর তুমি মোরে করেছি যে কায়! ভূমি ধর্মের সাগর, ভূমি ধর্মের সাগর, কাটিলে কাটিভে তুমি পার মৃপবর। আমি করেছি যে কায়, জামি করেছি যে কার্য, বধিলে আমারে ইথে পাবে ভূমি লাজ। মোর মরণ মঞ্চল. (भार गत्र भक्ता, ভারে না পাইলে মোর জীবন বিকল। ভারে হেরিতে বাসনা, ভারে হৈরিতে বাসনা. ना (हरद काहात मन् देवतक परतना ॥ ष्मक खरन गांत्र (शरम, श्रक खरन गांत्र दर्ग.म क्ति किमा खाल लाग छात्राद विस्कृत । ष्ट्यामि भाति य बहिटक, ष्ट्रामि माति य गहिटक, থেকে থেকে ভার রূপ পড়ে যে মনেতে। भग हटक वटह नीत, सम हटक हटह नीत, कामिनीव विश्दम आग श्राट्ट अस्ति । । আমি ভাহার কারণে, আমি ভাহার কারণে, নাকী ৰূপে ঘাইতাম তাহার ভবনে। त्य (य वहेन्ना जामान, त्य त्य वहेन्ना जामान, করিত যতেক রঙ্গ ভুলারে সবার।

ভাষি করেছিমু পণ, ভাষি করেছিমু পণ,
হারালে বিহারে তারে লইব কন্ধন।
ভাষি হারিলে বিহারে, ভাষি হারিলে বিহারে,
যভেক ভূষণ মম দিব যে ভাহারে।।
সে যে বিহারে হারিল, সে যে বিহারে হারিল,
হারিয়া বিহারে মোরে তুষিতে লাগিল।
কর বিচার নৃপতি, কর বিচার নৃপতি,
বারেক ভাষিতে ভারে কর অনুমতি।।

রাজপুত্তের যোগির নিকটে গখন। পর্যার।

রাজা বলে শুন চোর কোথা যোগীবর।

যাও কুমি আনিবারে কানন ভিতর।।

ভারে না দেখালে ভারে বধিব জীবন।

নূপের আদেশে রায় করেন গমন।।

সফে দিল নরবর যতেক কোটাল।

আনে আগে চলে ঘেন কালাস্তক কাল।।

পশ্চাতে রাখিয়া যার কত কত দেশ।

কানন ভিতরে হল উপনীত শেষ।।

ভাবেন কুমন রার কামিনীর কপ।

দেখিল তথার এক মৃগ অপকপ।।

স্বর্গ জিনিয়া বর্ণ অভি মনোহর।

কপেতে করেছে আলো বনের ভিতর।।

যতেক কোটালগণ পথের জনেতে।

নিত্রা যার জকাতরে কথা বক্টলতে।।

কুরস্ব করিছে রক্ষ দেখি**ছে রাজন**। **ভাবিছে এমন মুগ না দেক্সি कर्थन।।** *কখন কুরফ হন্ন যোড়শী ৰূপনী 🎼 क्थन क्रिट्स प्रक्ष करत् वरप्र अभी।। ভাহা রেখি নৃপস্কুত ভাবেন **লন্ধ**রে। क्ष्र निकाम चानि क्रम तक करत।। ভাবিয়া চিন্তিয়া রায় না পান সন্ধান। উচিত এখান হতে করিতে প্রস্থান।। উঠিল কোটালগণ প্লায় কুরন্স। দেখহ কোটালগণ কুরজের রক্স।। कूमरमत वांगी छनि स्विट्ह नकरन। না পায় দেখিতে মুগ যার ণবে চলে।। রায় বলে একি হেরি কাননেতে রঙ্গ। দেখিলাম আজি আমি স্বর্ণের কুরক।। मिनावती रदत दुवि रम अञ्चर्यान। ছ্রার উচিত হর ত্যজিতে এ স্থান।। বলেছিল যোগীবর মোরে যে বচন। সেই বাকা আজি মোর হল হে স্মরণ।। জাগেতে ভাহার বাণী করিনে প্রভান। **८मथिलाम छारा जामि जगउव नद्र।।** এইরপে এড়াইয়া কত কত স্থান। উপনীত হল্ শেহে যোগী সন্নিধান।। পুর্কমত যোগীবর জাছেন যোগেতে। रमित्रा क्रूबन तात्र जादनन सूट्यटक ।। यरक कार्केशिकाल मक करत नीत। हेक्टिक बन्दिक सदय करिएक भीता।

কুমনমোহন রার করিল প্রণাম।
কুপা কর যেন হর পূর্ব মনকাম।।
কেথিয়া কোটালগণ করে অমুমান।
সামান্যত নর যোগী এই হয় আন।।
ইহার কাছেতে পাব এর পরিচয়।
আনে যোগীবর হবে যথার জালয়।।
কেহ বলে দেবতা গন্ধন কিবা নর।
এইরপে অমুমান করে পরস্পর।।
পিরীতের না পায়ে অন্ত শান্ত করি মন।
রাজরুক্ক ভাবে কৃক্ক হলে সর্বক্ষণ।।

स्थानि हर् केटि स्था कर्य न स्थानिकथन।
शान हर् केटि स्था कर न ताकरन।
श्रीन ताहा क्रि स्था कर कि का तस्य।
कि का ति का स्था हिर्म कर विवत्य।
कि का ति रहित कर विवत्य।
कि का ति रहित कर विवत्य।
कि का ति रहित कर विवत्य।
कि का ति हित कर विवत्य।
कि का ति का ति हित कर विवत्य।
कि का त्या ति वाहा कर ता ना कर ता ना।
कि कि कि कि स्था ति हित के स्था ।
कि कि कि कि स्था ति स्था कि का न ।
कि कि कि हित हित हित कर ति हिर्म कि अपन।
कर कि हित हित हिरम कि स्था कि स्था ।
कर कि हित हित है स्था कि स्था निक्ती।
कर का न कि स्था कि स्था निक्ती।
कर का न कि स्था कि स्था निक्ती।

16 E

বিভা কি হরেছে ভার কুমদরোহন। विठादत जिनित्रा चाटत निर्म दक्षां अन्।। রার বলে মহাশ্র কর অবধান। বিবরিয়া কহি শুন তব সন্নিধান।। थक दिन हिलांस त्यां कांखिश संगरेत। বাসা করি থাকিতাম বিমলার ঘরে।। मिलारेबा दिन मुर्गद कुमांती। তাহার বিরহ জালা সহিতে মা পারি।। কামিনীর ৰূপ আমি খেরি যে নিয়ত। না হেরে ভাহারে প্রাণ হলে। ওঠাগত।। ষাইতাম নিশি হোগে নিত্য তার বালে। নারী বেশে থাকিতাম কামিনীর পাশে।। এইকপে নিত্য নিশি করিয়া যাপন। প্রকাশিয়া কৰি শুন দৈবের ঘটন।। এক নিশি কুজুহলে মাতিয়া তর্কে। ত্ত্বনে ছিলাম মোরা কৌতুক ভরকে।। क्रूच निमि পোराहेल इन्ध द्रवि आंगि। কুউদিত লুপ বাসে লয়ে ছঃখ রাশি।। কলন্ধ কিরণে ভার আক্রাদিভ করে। कुक्र नाम पूराहेन क्लक गांगदर्ग। ভনসমুঞ্জী সে রবির রাইঞ্জা ভাষার এহনে রার দিলেন দিগ্রহ।। क्यामात कदत इस यदिकाक करत । वाधित्रायुगन करत्र नरके शान बद्धा। ना कानि अनेन इदन देनत्वत घडेमा।

क्यां है। क्यां के के क्यां का मार्य वर्गा।

क्मन कामिनी।

যে যাত্তনা সহেছি গো কৰ কি কৌতুক! শর্মে সপনে মনে পড়ে ভার মুখা। অতএব রূপাময় হও সামুকুল। কুপা করে ভূমি মোরে যদি দাও কুল।। তা হলে বাঁচিবে প্রাণ পাব পরিবাণ। নতুবা ভূপতি মোর বধিবেক প্রাণ।। ভব ভুল্য সৈত্ৰ মখ নাহিক সংসারে। এবার বিপদে ভূমি বাঁচাও আমারে।। নৃপের আলরে চল ভূমি কুপা করি। নাহি যদি যাও ভবে আমি প্রাণে মরি॥ শুনিয়া কহেন যোগী ভেৰনা রাজন। ভব গালি যায় যদি আমার জীবন।। 🕆 তথাপি ভোমারে কেং নারিবে বধিতে ৷ হবেন। হবেন। রাগ বাতনা সহিতে।। ষুচাইৰ **কৰ চুংখ যাইৰ আপ**নি। কামিনী পাইবে ভূমি শুন ওগমণি॥ নিশ্চর জানিও ইহা নাহি কর ভর। অবশ্য যাইব আমি কান্তিপ নগর।। क्षारत्र क्रूटकः त श्रम क्षांवि मदन मदन। °পরার প্রবন্ধে রাজকৃষ্ণ ঘোষ ভবে।।

কুমদের সহিত হোগীর রাজ সভার উপনীত।
কুমদের বিনরেতে তুই যোগীবর।
বলে বাছা চল যাই কান্তিপ নগর।।
সূত সম ভাল বাসি ভোমারে রাজন।
শুনিরা ভোমার ছঃখ বিযাদিত মন।।

कुमन करिएम अष्ट्र जुमि नतामत। विलट्स शिक्षां कृति निक्शिमाळाइ।। এড়াইয়া কড স্থান শেষে যৌগীবর। উপশীত হল পিয়া কান্তিপ নগর।। কুমদে কহেন যোগী গুন বাছাধন। কোথার নুপের বাস কহ বিবরণ ।। রায় বলে সহাশর কিঞ্চিৎ দূরেতে। নৃপের চিজিয়াখানা ইহার পরেছে।। তাহার ভিতরে আছেয়তেক বিহঙ্গ। বন যন্ত আছে কত ভুজন্স কুরক্ষ 🛚। ভাহার পশ্চাতে ধীর নূপের ভালয়। অতুলনা সেই পুরী তুলনা না হয়।। চারি পার্শ্বে গড় ভার অতি মনোহর। তথার থাকেন নৃপ শুন গুণাকর।। উপনীত হন যোগী নৃপের সভার। মহা সমাদরে রার সভাতে বসার !! সভাস্থ সকল লোক মত করে শির[্]। যোগী কন থাক স্কুখে পাশে নৃপতির।। र्हात्य रहत्र कान अहे नाक्षा कति। পর স্থাধে স্থী আমি পর ছাথে মরি।। আজি বড় শুভ দিন কহেন রাজন। বুড়াল ভাপিত প্রাণ হেরে জ্রীচরণ।! সদত বাসনা পদ ছেরি পো নিয়ত। কৃপাকর যোগীবর আমি জ্ঞান হত।। ভার এক নিবেদন করি সরিধানে। চোরের কি নাম হয় বাদ কোন স্থানে।

कृतकार्था करोड



किंदा चांकि कांब्र (बहै। चारनेत विरमय। कांग्रिल উश्दात कृष्य मोशि श्रेष भ्या ।। य कर्य करब्र हि त्यांत ना इत्र वर्गना। আমার জন্দরে চুরি করিয়া ছলনা।। শিখাইতাম উহারে করি কি উপায়। নাচারে পড়েছি প্রভু ভেবে প্রাণ যায়। কলক্ষ যুচাতে নিয়া কলন্ধ কিনিব। करप्रत धन कांत्र छु:थे कि एपथित।। क्रमान गहित तल हहेन्ना गिर्मुत्। ক্রোধেতে কাপিছে অঙ্গ ব্দনক ঠাকুর।। কেন বা না কহি নোরে করিলে এ কায়। ইহাতে কাটিলে ওরে নাহি কোন লাজ।। যে যেমন কর্ম করে তার দণ্ড আছে। কোধেতে করিয়া কর্ম পণ্ডাইর পাছে। কর্মা দোধে নিজ নাম হীন অভিশয়। আপন ক্লার্য্যেতে জ্রেষ্ঠ ব্যক্ত বিশ্বময়।। যোগী কন শুন রায় কহি পরিচয়। কুমদমোহন নাম সুরাট আলর।। स्रात्रकाल नृशिकत कनिर्छ नक्ता। বন্ধুর বিচ্ছেদে ইনি ত্যঞ্জিয়া ভবন।। নিরাহারে অমিতেন কাননে কাননে। देनव त्यांदध जेशनीक जाभाव भन्दन ॥ কহিরাছিলাম ওরে ভোষার কাহিনী। কামিনী নামেতে আছে তাহার নন্দিনী।। বিচাবে পণ্ডিত বড় মবিনে সে ধনী। ব্দিনিলে ভোষারে তারে দিবে নুপ্দণি॥

कृमम कामिनी

9

কান্তিপ নগরে বাস স্ক্রিখ্যাত নাম। ভাহার সভাতে তুমি যাও গুণ ধাম।। বিচারে **হইবে জন্ম নুপের সভার**। স্থাসনে দিবে বিভা চন্দ্রচুড় রাম।। किছू निम थांकि छथा यांत्व निम वांत्म। পাঠাবেছি**লাম আমি এই অভিলা**ৰে।। পরম পণ্ডিত রায় কুমদমোহন। তব শুভাসনে বিভা দাও হে রাঞ্চন।। ইহাতে নাহিক লাজ নুপের তনয়। উহ'রে কামিনী দিতে উপযুক্ত হয়।। গোপনে করেছে কাষ না কহি ভোমারে। **এই माळ (नांव नृश कमटह छेशांद**ा !: জামতার যজ বটে চায়ে দেখ রায়। নাহিক ভমন্না মোর কি করি উপায়।। আহা মরি কিবা হাসি না দেখি স্বরূপ। কুমদমোহনে ক্র্যা দান কর ভূপানা রাজা বলে মহাশয় করি নিবেদন। ক্রোধ আসি সদা সোরে কর মিবারণ।। আপনার বাক্য আমি লঙ্ক্রিতে না পারি। অবশ্য কুমদে আমি দিব ছে কুমারী॥ কুমদমোহনে রাম কহেন যতনে। क्रिन्त क्रिंटन जूमि ना करह शांभरन।। নিজ দোবে পেলে ভুমি তার্ন প্রতিকল। क्मन करिए अपू त भम भक्त।। বারেক হেরিলে ভারে ছঃখ দুরে যাবে। নে যে প্রাণাধিক ধন আমারে নে পাবে।

कूमक किनी।

রাজকৃষ্ণ ভাবে কৃষ্ণ সদত অন্তরে। দীননাথ কর পার এ ভব সাগরে।।

কুমদ কামিনীর রাজা কর্ত্তক বিবাহ যোগীর বচনে জুফ হইয়ে রাজন। কামিনীর বিবাহের করে আয়োজন।। পাত্র মিত্রগণে কম নিমন্ত্রিতে সবে। রীত্রমিত আছে যাহা না করিলে নয়। প্রতেতে হয়িতা পরে তুজনার হয়।। রামাগণ আদি সবে হরিটা মাধায়। পুলকে পুৰ্ণিত হলো হেবে দুজনায়।। এয়োগণ উলুধ্বনি দের অবিরত। সুখ নিশি সুউদিত দুঃখ নিশি গত।। বিবাহের দিন ছির হলে। লগ সভে। कना। मान भदीशाल करतन तम मर्छ।। निमञ्जिष्य कांत्रि हता डेशनीर । দ্বিজগণে চিস্তা করে নুপতির হিত।। পাত্র নিত্রগণ আদি যতেক আমাত্য। সভাষ হইল সবে হইয়ে কুতার্থ।। नाना गरम वाजिए हार विविध वाजना। কালয়াত গুণিগণ ক্ত শত জন।।। বাজিকর বাজী করে অভি চমৎকার ৷ দে কথা কহিতে পেলে বর্ণিতে অপার।। পুরোহিত মন্ত্র বলে শান্তের বচন। मध्येगांन करत नृभः तक्रक क्रिका।

বিবাহ নির্বাহ হলো পরে ন্ত্রী আচার। বাসর গৃহেতে যান নুপের কুমার।। যত পুরবাদীগণে করিছে কৌতুক। मृद्र राज मन कुःथ डेथिलन सूर्य ॥ ত্তজনার মন তঃখ ছিল যত মনে। বিচ্ছেদ মিলন হলো শুভ সেইক্ষণে 🛭 জ্ঞাতি বন্ধু আদি করি যত মিত্রগণ। সুখেতে সকলে রাজা করাণ ভোজন। **ंजाकनारल निक वादन मदन यात्र हत्न**ा ভূধরের যশ ব্যাখ্যা করিয়ে সকলে।। कू मिनी कू मरमत छेमिटक शतिरव। হেরিয়া যুগল নেত্রে হরিষে বরিষে। রামাগণ ভারাগণ রমেছে ঘেরিয়া। রতি রতি পতি যিনি যুড়ার হেরিয়া॥ বাসর সুশ্যা করে সকলে যতনে। হাস্ত পরিহাস্ত করে কুমদের সনে।। সভাস্থ সকলগণ কামিনীর দল। কামিনীর বাবে সবে করে কোলাছল। পালঙ্গ উপরে বলে কুমদমোহন। মহিষী আইল তথা করিতে বরণ ॥ वद्रश कदिएम दानी साम निक वादम । রামার্গণ নৃপস্কুতে বিনরে সভাবে।। কামিনী কহিছে নাথ নাহি ছিল মনে। পুনঃ মোর দ্বেখা ছবে জার ভব সনে।। নিয়ত নেত্রের নীরে বৃক্তেবে যেত। **एव गांगि कर्द्रहिल् कोवनास ब**र्गा

क्रम कार्यिती।

জাশা বপ নীর আমি করিয়ে জক্ষণ।
করেছি হে প্রাণনাথ জীবন ধারণ।।
কদমের চাঁদ তুমি হওছে উদয়।
তব জদর্শনে হেরি সব ক্রফময়।।
তানক্ষ কীরণে নাথ নাশ ছংগ্রাশি।
তামি চকরিনী তব সুধা অভিলাধী!!
বাক্যের তরক্ষে হল অরুণ উদয়।
দে যে সভা কিবে শোভা বর্ণন না হয়।।
সুউদিত প্রভাকর লমে সুথ করে।
গোনন্দেতে রামাগণ যান স্থানাস্তরে।।

কুমদ কামিনীর রহান্ত।
নাগর নাগরী দোহে বিচ্ছেদে মিলনে।
মাতিল ভিগুণ সুথে তেরে সকোপণে।।
নিরত কিন্তরীগণ কাছে নিয়োজিত।
কুমদ ভাবিছে বাসে যাইতে উচিত।।
কেমন আছেন মম জনক জননী।
মম লাগি কাঁদিতেছে দিবস রজনী।।
ভাতএব কহি প্রিরে যাইব জালয়।
চিত্রেতে নাহিক সুখ ছঃখ সাতিশয়।।
কামিনী কহিছে নাথ যাব তব সনে।
কিছু কাল খাকি হেখা যাইব ছজনে।।
এতদিন ছিলে তুমি সদা মন ছঃখে।
এবে নাথ কিছু দিন থাক হেখা সুখে।।
রায় বলে রসবতী নারিব রহিতে।
ব্যাকুল হয়েছে প্রাণ না পারি খাকিতে।।

নিতান্ত ভোমার যদি থাকিতে বাসনা। তবে মোরে বিধুমুখী করোনা ছলনা।। পুনর্কার আসি আসি যাইব লইরা। ছবার বিদার কর রাজনে কহিয়া।। ধনী বলে প্রাণনাথ এ জার কেমন। কেমনে নিৰ্ছার হয়ে কহিলে বচন।। ভূমি মম ধন প্রাণ গুণের দাপর। আমারে ভাজিয়া যাবে সুরাট নগর।। নাহি তব দয়া ধর্ম একি হেরি ধারা। হেরিয়া ভোষার ধারা নেত্রে বহে ধারা॥ তোমার কি ক্তি নাথ পাইবে ভূতন। আমার হইতে আর করিবে যভন।। যে ছঃখ সে হবে সোর কব কি ভোমারে। তোমার যুড়াবে প্রাণ ছেরিরা তাহারে।। কিন্তু অধিনীর প্রাণ নহে তব মত। তোমা বিনে অন্য জনে নাহি মন রঙ।। कहि श्वन श्वनिधि यादि निद्रक्टरन। তবে মোরে কুপা করে লবে থেও সমে।। তব অদর্শনে আমি ত্যক্তিব জীবন। নিয়ত বাঞ্ছিত চিত হেরি সর্বাক্ষণ।। পুরাতন হলে নাথ যতন কে করে। নুত্ৰে ভুত্ৰে সদা রাবে সমাদরে।। প্রথম মিলন হলে যত সুৰোদর। কিঞিৎ পরেতে দেখ নাছি তত রন্ন।। कुमन करिट्ड थनी क्रमा इलना। त्रांबक्र्रास्क कड्ड प्रज्ञ केत्रांग वर्षना ॥

কুমনমোহনের রাজার নিকটে স্বদেশে ঘাইবার প্রার্থনা।

প্রভাতে উঠিল নৃপ হরিষ অন্তরে। कुमरम बर्गान कारके श्रेत्रम क्यांमरंत ।। গুরু পুরোহিত আদি সবার সদলে। জাসভারে কন রাম বিনম হচনে।। किছू मिन थांक वांष्टा आयात्र नगरत्। অন্তরের গুন ভূমি রাধিব অন্তরে।। কামিনীরে দিয়ে জামি পেনেছি ভোমারে। ष्यस्य दर्श्वमा कञ्च जुलादम जामादत ॥ ক্ষদ কহিছে ভন করি নিবেদন। গত রজনীতে আমি দেখেছি স্পন।। জনক জননী মম পতে ধরাসনে। আবণের ধারা সম বহিছে নয়নে !! তাহার কারণে সদা আছি মন তঃধে। বাসনা যাইৰ বাসে পরম কৌডুকে ।৷ বিদার আমারে কর নূপ মহাশয়। जद यद करनवत करी गांडिभन्न।। বছদিন হল আমি তেকে আদি বাস। কানন ভিতরে গিয়া থাকি অফী মাস।। তথা হতে তব বালে আছি কিছু কাল। ছয়ায় বিদায় দেহ মোরে মহীপাল।। নিভান্ত যাইব বাসে করেছি বাসন।। य इन्द (शर्फ हि ब्योर्ग ना रह दर्गना ।। রায় বলে বাছাবন শাস্ত কর মন। তাহার কারণ কেন এত উচাইন।।

टेक्टवत घछेना यांश इटब्रट्ड घछेना। ক্ষমিবে আমারে ভূমি তা ভাবি তেঞ্জনা।। ঁ এই সদা চিতে সাধ লোচন ভরিয়া। দিবা বিভাবরি হেরি সদনে রাখিয়া ৷ কিঞ্চিৎ বিনয় কর আনারে আচার্ব্য। বাসেতে যাত্রার দিবা করাইব ধার্যা। কোত্যাল চোপদার যতেক আমার। রাখিয়ে জাসিবে গিয়া জালয়ে ভোমার।। রায় বলে মহাশয় কি কায কিন্তরে। কৈঞ্চিৎ নাহিক ভর তব ক্রপা নোরে।। गाइत घटनक शथ अहे नमा छति। ইছার কারণে ঢাহি দিতে হে প্রহরি।। अखाक मकलशर्व आरमिन वांत्र। আনিবারে গুহাচার্য্য তাহার সভায়।। ্ আনিবারে চোপদার যভেক চলিল। আনিয়া আচার্য্য সবে ভুজুরে ভেটিল।। নুপ কন গুহাচার্য্য দিবা কর স্থির। कामका वाद्यम वादम स्टब्स्ट अस्तित।। শুভ দিনে শুভ ক্ষণ দেখ শুভ তারা। বিচারিয়া দেখ সবে কেবা কোথা তারা।। জ্যোতিযের মতে দিবা কর নিরূপণ। যে যোগে করিলে যাত্রা অসাধ্য সাধন এ এমত দিবস দেখ করিয়া গণনা। যে য়াত্রায় নাহি ঘটে বিপদ্ ঘটনা॥ গুছাচার্য্য কন নূপ করি নিবেদ্র। গত কলা শুভবিদ অতি শুভক্ষ।।

কুমদ কামিনী।

চন্দ্র ভারা শুক্ত আছে উত্তম বাসর।
উক্ত দিবা কর স্থির জুমি নৃপবর।।
যাত্রার সুফল হবে শাস্তের বচন।
উক্ত দিনে জামতারে পাঠাবে ভবন।।
অত্যম্ভ উষাতে যাত্রা করিছে বিধান।
যোবা ইচ্ছা নরবর কর প্রমিধান।।
রাজকৃষ্ণ ঘোষ ভনে রচিয়া পরার।
কুমদমোহন বাবে যাইবে এবার।।

কামিনী বহিত কুমনমোহনের বিদায় সভা করি বসিলেন চন্দ্রেড় রায়। পাত্র মিত্রগণ আদি লইয়া সংগ্রে॥ কোত্রাল চোপদার কাতারে কাতার। দণ্ডাইল সবে মেলি সদনে রাজার ॥ नकिय कुकादत मभः इहिष अस्तरत । কোলাহল অয়ধ্বনি সকলেতে করে।। পাত্র মিত্র গণে রায় কহেন ভখন। ক্মদে ভাগুরি হতে দেহ বছ ধন।। রজত কাঞ্চন আদি ভূষণ প্রবল। কুমদমোহনে দিতে কহেন ভূগাল।। আনিল কিন্ধর গণে নুপের আদেশে। নিয়ে জিল জবিরত বিশেষে বিশেষে।। गलिका गालको छुदै मदक मानी मिल। কুমদমোহন রায় ভূষিতে লাগিল।। कुमि मर्मे दन छा। एत्य दिस मरन। তোষা সম কেহ নাই এছিন ভুৰনে॥

পুনঃ মন ধানে কৰে হবে আগমন। প্রকাশিয়া কহ শুনি বুপের বন্দন।। রায় বলে মহাশার ভোমার ভমর। হেরিতে বাসনা সদা তব **পরে**দদ্ম।। প্রাণের অধিক মম কুমারী কামিনী। याशदत ना रहरत जावि निवदन वामिनी॥ ত্যহারে তোমারে বাছা করেছে আর্পণ। ८मथ (तथ खनमनि आमात्र जीवन।। করি অত্থ আদি ভরি ধেবা ইচ্ছা হয়। ৰল তুমি বাছা কিলে যাইবে আলয়।। कूमन करइन मृश कति निरवहन। তরি আরোহণে বাদে করিব গমন।। তা হলে ভ্রায় উপনীত হব গিয়া। হছেনা বিলয় দেহ সুদায়া করিয়া।। শুনিয়া কহেন নৃপ ডাকিয়ে কিন্ধরে। নাবিক গণেরে যাও আন ছরা করে।। আক্রা মাত্র দুতগণ চলিল ভথন। আনিল নাবিক গণে নৃপের সদন।। নূপ কন কর্ণধারে আনিতে তর্ণী। জামতা বাদেতে মম বাবেন এখনি।। सूत्रां ने ने ने तत निरंत या है रिव क्यां है। সাবধান করি জরি বাহিবে জ্যান।। कुमन अशाम करत तालात तागीत । তুৰ্গা হুৰ্গা বলি জান বাটীর বাহিরে॥ कामिनीत करत पति सरियो करिए। অবিরম্ভ শত ধারা নমনে বহিছে।।

कू मंदर्शिम में।

কেমনে রহিব আমি না হেরে ভোমারে। জননী বলিয়া কেলো ডাকিবে আমারে।। च्ना भूती करत यय साहरत कस्ती। মন ছঃখে রব আমি দিবস রজমী।। শুনিলে ভোমার ধনী ভাষিতাম সুখে। এবে যাবে চলে ভুমি ভাসাইয়া ছঃখে।। ष्ट्रकात नग्नन जुमि मोहिटखंद थन। হৃদয়ের ধন ভুমি অযুল্য রতন।। বারেক না হেরিলে গণিতাম প্রমান। এখন সে সাথে মম ঘটল হিসাদ !! कामिनी विनम् कति करिएइ द्रानीतः। **जित्रिक्ट विश्वश्वी महत्मद्र मीट**त ॥ ভেবনা জননী তুমি হওনা কাতর। আসিব এখানে পুনঃ কিছু দিন পর !! প্রবোধিয়া জননীরে নত করে শীর। হর্ষ মনে যায় ধনী বাটীর বাহির।। মহাপা হইতে দোঁহে উঠিল ভরিতে। (मोका <mark>वाहि भरंग छति थूनिन जु</mark>र्तिरछ ।। বাহিতে লাগিল ভরি দিবস রক্ষনী। करें हिटन कानीशाटम में इहिन उदगी।। কর্ণধারে কন রাম হরিশ ভারতের। वाजना द्वित शिक्षा देशव विष्यगद्र ॥ এই স্থানে রাখ তরি শুন বাছা ধন। किছু पिन धेर शांदन कतिव याशन॥ কাশীধানে উপনীত নৃপের কুমার। রা**জহুক ঘোৰ কর** রচিরা পরার।।

কুমৰ কামিনীর কালীখামে উপনীত ও মণি নাপিতিন কৃষিত কুমদের সাক্ষাৎ।

ভরি হতে নূপ স্তত উঠি**য়া সহ**র: হেরিবারে চলিলেন দেব বিশ্বেসর।। युगल युगल क्रश करत मत्रभग। অমিতেছে কাশীধানে বাসার কারণ।। হেনকালে নাপিতিনী আইল তথায়। (श्विष्ठ) क्याप धनी विनय सुधाय।। কি কাবণ ভ্রমিতেছ হেরি তারে ছারে : প্রকাশিয়া কহু মোরে তথ্য কর কারে॥ এদেশী নাধিক হবে করি অনুমান। অসুভাবে বৃধি তুমি ধনির **সন্তান** ।। আমারে কহিলে পাবে বৰ বমাচার। কিবা আন কোখা বাদ কহছে ভোমার ৷৷ * কুমদ কহিছে শ্রন ময় পরিচয়। कुमण्टमाइन योग सुदां छ जानत्र॥ অন্ত জানিয়াছি হেথা ঠাশা নাহি পাই। বাদার কারণে মোরা কিরি টাই টাই ॥ মিলাইরা দেহ বাসা করণা প্রকাশি। আমি তব সুত সম তুমি মম মাসী।। মণি বলে গুণাকর তুমি ভাগাধর। क्रभा करत हेल यंपि किश्निय असूत ॥ ভা হলে পারিব নিতে উত্তম আলয়। তথার করিতে বাস তব যোগা হয় ৷৷ তাহার দক্ষিণে হয় আমার ভবন। নিয়ত হেরিব আমি গিয়া এচরণ।।

কুমদ কহেন চল ঘাইব তথায়। কিছু দিন আছে আগ থাকিতে হেথায়।। **এই क्र. भ ठ निर्दास कू मन्द्रमाह्म ।** মণির সক্তে জান বাসার কারণ।। ধার্য করি তথা বাসা নৃপের কুমার। তুরিতে তরিতে জান রায় পুনর্জার । ডাকিয়া নাবিক গণে ক**হেন সন্তর**। ভূলিতে সকল দ্রব্য স্থলের উপর।। আজা মাত্র দুলিলেক নৌকা বাহিলণে। বাসাতে রাখিয়া এল দুক্লে যুস্তন।। रुक्त धन फिल मार्च ग्रेंडिंस कासाता। যাইবারে এন সবে ক্রিপ নগরে।। ক্রেমর। সভলে থাও সুজোর **সদ**নে। शिवाणयां देवत्व करित्व संभित्ने ।। চলিল নাধিকলণ খুলিয়া তর্থী। राद्रिक मानिन कवि मित्र इससी।। कुमन का यिमी (पंहिट्स इंड विक सत्म। কানী ধানে করে তাস আমণে হুস্তন।। এক দিন 🍦 । সুত স্থির মন্দিরে। পিয়া ছিলেন দিবলে হেরিছে মণিয়ে।। देमदरवारभ ८५:दिखान এक চिक्रशंहै। যাছাতে মজিল মন কুমনের চট।।। রায় বলে ওগো মানী বল গো কাহিনী। এই পটে লেখা ৰপ কাহার নিদ্দনী।। মণি বলে বাছাধন আছে তাতে লেখা। পজিলে পশ্চাতে তার পরে পাবে দেখা।। প্রেমের না পায়ে অন্ত ভাবি হরি সার। রাজক্ষ ঘোষ কয় রচিয়া পরার।।

ভুমদের আক্ষেপ ও মণির কিশোরীর নিকটে কুমদের পরিচয়। প্রযার।

িত্র পটে হেরে চিত্র হতেছে অস্থির। সেই কথ হলে মনে নেত্রে বহে নীর ৷৷ সেই মুখ হেরিবারে সদত বাসনা। क्रमा कवि प्रश्र प्रथा कुराएक राज्या।। মণিরে কংখন রাম কছ বিবরণ। কার চিত্র গাট করিলাম দরশান।। অণি বলে নিবেদন করি নুগবর। ইস্কান্ত নালে আছে এক মনাগর।। एक्षित निमनी ७३ (नथ खनमनि। इम्बीब शीदांगवि त्य हाम्यम्मी।। সেই ধরা বামে ধনা হবে বেই পতি। কত সুখে দেই জন ভুঞ্জিবেক রতি।। নাম তার কিশোরী দে প্রমারপ্রী। ছার রূপ হেরে শশী ভূমে পরে থসি।। সেইরূপ বারেক যে হেরেছে নয়নে। কটাক্ষ শরেতে তারে বিধেছে যতনে !! ব্রায় বলে সে ধনীরে হেরিব কেমনে। সদত জাগিছে সম সেইক্লপ মনে। চিত্র পটে হেরে চিত্র হতেছে চঞ্চল। ्न्हें क्षेत्र १८न माम माम बादक वटह समा।

কেমনে হেরিব বল করি কি উপায় ৷ মিলন **অভাবে** ভেবে ভেবে প্রাণ যায়।। নাপিতিনী বলে কহি শুন হে রাজন। তব বাসা হতে ভারে করার দর্শন।। নিত্য ছে আল্তা নিতে ঘাই তার পায়। ষত্ত গিয়া তার বাসে দেখাব তোমার।। যথোচিত ভাল বাদে আমারে সে ধনী। অংশ্রি আরি বলে মোরে ভাহার জননী। সে আমারে মাসী বলে কুকুণা প্রকাশি। প্রাণের অধিক আমি তারে ভাল বাসি।। ভোমার কুটিম পরে থাকিবে হতনে। ভাহার ক্রট্টিমে মোরা থাকিব ছজনে।। बता कति छोत बादन गुंख फादन भागी। হেরিলে তাহারে আমি আনন্দেতে ভাগী দ নত্ব। ত্যভিব প্রাণ তাহার কারণে। নিয়ত বাঞ্চিত চিত হেরিতে নয়নে।। মণি বলে চলিলাম কিলোরীর কাছে; কিন্তু বাসি মনে তর বাজ হয় পাছে 🖯 ইশ্রকান্ত সহে শান্ত ক্রহান্ত সমান। এ কথা শুনিলে কর্ণে বধিবে পরাণ।। ভাবিয়া চিস্তিয়াঁ ধনী যায় ভাড়াতাড়ি। উপনীত হলো যথা সাধুর কুমারী 🛭 দেখিল কিশোরী গুহে আছেন সমনে। কিশোরী কিশোরী বলে ডাকিছে বতনে 🛚 শুনিয়া মণির ধনী উঠিল কিশোরী : यनि वरण वाहा जव इः व रण्टव मति॥

চারি দিন হলো আজি দেখিনী ভোমারে।

- যে ছুঃখে ছিলাম আমি নারি বর্ণিবারে।।

স্করাট নগরে বাস নূপের কুঁমার।

কুমনমোহন নাম বাসা কাছে তার।।

মাসী মাসী বলে মোরে বড় রূপবান।

অবনীতে নাছে হেরি তাছার সমান।।

কিবা স্বর পিক্ষরত শুনিয়া পলায়।

হেরিলে তাহার আঁথি মৃগ লাজ পায়।।

আন্তরে হেরিলে তারে জ্ঞান হয় শশী।

গগণের শশী ভূমে পড়িয়াছে গসি।।

ধনু সম ছই ভূজ কিবা তার হানি।

হেরিলে তাহারে মন বাসে হতে দাসী।।

কুমদের হেরে রক্ষ রাজত্বক কয়।

দীননাথ দীনবল্ধ দিও পদাশ্রম।।

কুমদের কিশোরীর সহিত মিলন ও কিশোরীর আক্ষেপ কুমদের কাণ শুনি ভাবিছে কিশোরী। মণিরে কহিছে মাসী উপায় কি করি।। কেমনে হেরিব ভারে বল গো আমায়। না হেরিলে ভার কপ ভেবে প্রাণ যায়।। কি কথা কহিলে মাসী হৃদয় বিদরে। ফিলন বিহনে মন ধৈরজ না ধরে।। একে জভাগিনী ভাহে চির বিরহিণী। ভামার সমান কেহ নাহি জনাধিনী।। যৌবন চ্ইল গভ বিভা নাহি হলো। প্রেমের মালঞ্চে ভক্ল বারি বিনে মল।।

তাহে কোকীলের খর শর জান হয়। বুকে ছঃৰ মুখে হাসী প্রাণে নাহি শয়। মণি বলে বিনোদিনী ভোমার বিরহে। অহর্নিশি তার প্রাণ অহ রহ দহে ॥ চিত্ৰপটে তব ৰূপ করে দর্শন। চিত্ৰেতে নাহিক সুণ বিষাদিত মন ! বাস্তনা করিয়া ভারে হাখিয়া ভবনে ! ভোমারে দেখার বলে এসেছি যতনে।। ভাশাবারি করে প্রাণ ভাশা করে ভর। তব আশে পথ চাহি আছে নিরস্তর।। এই তব বালাখানা বাটার উপরে। সাধ থাকে হেরিবারে চল মন চোরে।। তথা গিয়া সঙ্গোপণে দেখিবে নম্বন। তুজনের যাবে ভঃথ হেরিয়া তুজনে ।। নে আছে কুট্টিম পরে স্নাশে হেরিবারে ভাই আদিয়াহি হেথা কহিতে ভোমারে। किर्माती कहिरह भागी दश्म निम १८व ! ं विधि कि मिलार्य नितन तरमत धर्गत ।। চল চল ভবে যাই জীবন জুড়াই। সে আমার ধন প্রাণ যদি ভারে পাই।। অক্ষেতে নয়ন পেলে যত সুখোঁ দয়। আমার ক্ষরে হবে পূর্ণ চন্দ্রোদর।। कुर कात्म कुर करन ताथित्रा भागाता। মণি দেখাইরা দিল কুমদমোহনে !! ভ†বিছে ছুজনে হেরে ছুজনার কপ। कित्माद्री कश्टिक मानी ना प्रिचि चक्ता।। জাহা মরি ওরে বিধি গজেছে নির্জ্ঞান।
কদরের ধনে সদা রাখিব যতনে।।
কাল লইরা করে নৃপের কুনার।
ধনীরে ইঙ্গিতে কন অধীন ভোমার।।
তব প্রেমে মজিলান দেখ রেধ ধনী।
তাজনা তাজনা মোরে সুধাংশুবদনী।।
তঞ্গলে ইঙ্গিত করে কহিছে কিশোরী।
কদরের ধন এদ কদে কুপা করি।।
ভোমারে জীবন সঁপে যুড়াইব প্রাণ।
তুমি মম ধন প্রাণ তুমি ধ্যান জ্ঞান।।
ত্জনের প্রেমে মজে ভাবিছে তুজনে।
হেরিরা গোপনে রাজক্ষ ঘোষ ভনে।।

কুমদের নিকটে কিশোরীর স্বর্ণের বাঁশী প্রেযণ ও কুমদে? নিশিতে কিশোরীয় বাবে গমন। পঙ্গাব।

ভূবর্ণের বাঁশী এক কিশোরী যতনে।
মণিরে দিলেন দিতে কুমদমোহনে।।
নিত্য যামিনীতে তারে আনিবে এখানে।
তুমি তিনি ভিন্ন যেন অন্য নাহি জানে।।
কহিবে তাহারে করিতে বংশীর ধনী।
আসিবার কালে মম বানে গুণমণি।।
শুনিলে বাঁশীর ধনী গবাক্ষের ছারে।
রজ্জু ফেলি দিয়ে তুলি লইব তাহারে।।
বাঁশী লয়ে নাপিতিনী চলিল তবনে।
কিশোরীরে তুমি যার বিনর বচনে।।

मनिद्र विशेष मिर्द जीविट्ड किर्मादी। কতক্ষণে সুউদিত হবে বিভাৰরী।। কেমনে হেরিব আমি সেই গুণাকরে। না হেরে তাহারে মোর কদর বিদরে।। মণি গিয়ে উপনীত হলো নিশ্ব বাসে। কুমদ ধনীরে ডাকি বিনরে জিঞ্চাদে।। कि वंतिता कर मानी ता विश्वपनी। মিলন বিহনে আছি মণিছার। ফণী।। নিবেদন করি শুন নৃপের নক্ষন। নিশিতে তাহার বাবে করিতে গমন।। ভোমারে কংহছে মোরে করিছে বিনয়। ভার চিত্র বাঁশী এই দেখ মহাশয়। গোপনে নিশিতে গিয়া বাজাবে বাস্থী। खिनिटल दीनीत भनी जामिरच किर्माती॥ এই বাক্য কৃষ্টি মোরে পাঠালে দে ধনী ! তার চিত্র বাঁশী এই লছ গুণমণি।। চলিলাম আমি বানে নিশিতে আসিব। क्छनांत मन क्रांच आकि घुष्टाहेत।। বিদায় হইয়া মণি যায় নিকেডনে। क्यम खाविष्ट्र यस याहेव क्यान॥ কখন হইবে অস্ত আজি দীনমণি ! কতক্ষণে আ'জি হবে উদয় রঞ্জনী।। বারেক হেরিয়া মন করেছে হরণ ৷ মিলন বিহনে মোর দহিছে জীবনী।। ওহে নিশাকর ভুমি হও হে সময়। মিলাইরা দেহ ভারে হইয়ে উদর।।

তপন তাপেতে ততু হলো তার তার। किटमात्री विश्रम क्षांव मरश् निवासत ॥ কিশোরীরে মাহি হেরে হেরি খুন্য ময়। তার অদর্শন কাণে বিদীর্ণ হৃদয়।। এইরূপে ক্রমে অন্ত হলো প্রভাকর। সুউদিত সুধাকর লয়ে সুধকর।। र्श्वदम् तकनी मार्थ सूर्थर जावित्ह। কিশোরী নাথের আশে নিয়ত ভাবিছে।। কুমদ সুসাজ করি বাঁশী লয়ে করে। মণিরে ডাকিতেছেন হরিষ অন্তরে।। এन মাসী চল याई यूज़ाटा खीवन। শুনিলে ভাহার ধনী যুড়াবে ফ্রাবণ।। - মণি বলে কহি শুন নুপের ভনয়। উতলার কর্মা বাছা এ সকল নয় ।। निक्शिपत करें करन गांहित गण्या। **दिश्व वाहा (यन नाहि काटन अना कटन!!** কিঞ্ছিং বিলম্ব কর কিঞ্ছিং রজনী। হইলে ভাহার বাসে যাব গুণমণি।। সদাগরে সদা ডরি পাছে ব্যক্ত হয়। তাহার কারণে মোর চিন্তা অভিশয়।। কুমদ না শুনে মানা কছে মাসী চল: ना (श्रुत त्र विदना किनो ज़रक वरश कत।। বে আছে আমার আশে চাহি আশা পথে ত্রিভূষদে কেহ নাই মোর ভোমা হতে।! মণিরে লইরা সঙ্গে কুমদমোহন। কিশোরীর নিকেতনে করেন গমন।।

গবাকের ভারে গিরা বাজান বাঁশরী।
কুমদে যতনে তুলি লইল কিশোরী।।
জানক্ষে মাতিল দোঁহে হেরিয়া তুজনে
পারাব প্রবদ্ধে রাজকুষ্ণ ঘোষ তথে।।

কুমদ কিশোরীর রহান্ত ও বিবাহ। কুমদের করে ধরি যতনে কিশোরী। বসিলেন লয়ে তারে সিংহাসনোপরি॥ গন্ধ বিবাহ করে করে আঁথি ঠার। সে সভা দেখিতে শোভা অতি চমৎকার।। রতি রতি পতি সহ হলে। উপনীত। হেরিয়া যুগল রূপ ভাবে চমকিত।। **एक पूर्वा माकि क**ित थूलि निक्र माला। कूमरमत शत्न मिल शामि गासु वाला॥ অন্ত হতে গুণনিধি হলে মম নাথ। ত্যজিয়া যাওনা মোরে করিয়া জনাথ।। তুমি মণি আমি কণি অধিনী তোমার। ত্রিভূবনে হোমা সম কেহ নাহি আর।। ভূমি মম ধন প্ৰাণ ভূমি ধ্যান কান। ভোমারে হারালে নাথ ত্যালিব এ প্রাণ।। রায় বলে বিনোদিনী কর কেন থেদ। তুমি আমি এক প্রাণ দেহ মাত্র ভেদ।। कौरन मा इत्ल खन्ड वित्कृष इतना। যুচাইব মন ছঃথ যাতনা রবেনা।। সভাস্থ সকলে গেল নিঞ্জ নিজ স্থান। मिंग वर्ता कहि (माँटि क्र अवधान।।

ঘটক বিদার কর সভা ভঙ্গ হয়। শুনিয়া দিলেন হার নুপের ভনয়।। কিশোরী হাসিয়া কর কুমদমোহনে। ছতি গুড় দিন আজি মম নিকেতনে।। গুর্ণ শশধরে হেরি হৃদয় মাঝারে। ধরি পায় রুসরাজ তাজনা আমারে।। মানসে প্রতিমা আমি করেছি নির্মাণ। विष्फुरमदा श्वनिधि मित विमान।। যতনে আকিঞ্চনে সাজায়ে সারি সারি। गानम देनविद्य कति भिव खिंक वाति।। জানন্দ সুগছা পুষ্পে করিব পুঞ্ন। कोश क्षश इरव भांत्र कीवन सोवन ॥ প্রেণয় বসন সমাদরে পরাইব। কুল মান অলম্ভার অঙ্গে শাজাইব।। বিবিধ বিধানে দেখ বিষিধ প্রকার! বিবিধ ভূষণ মম বিবিধ বিহার।। কহিলান গুণধাম ভোমার সদনে। পুরাও মনের সাধ ছেরিব নম্মনে।। বাসনার হে বাসনা পুরাও বাসনা। বারেক দেখাও ৰূপ নাজিয়া অঙ্গণা ভা হলে বুড়াবে প্রাণ যাবে মন ছঃধ। क्षमग्र-कानदन विकमित १८व सूर्थ।। রায় বলে সুধায়ধী দেহ **অ**ভরণ। রমণির মুপ আজি করিব ধারণ।। পুরাব মনের সাধ সাজিয়া কামিনী। विष्कृत्तरत विशक्तन पिव विस्तिपिनी ॥

कूमन कांत्रिमी।

খনক হেরিয়া রক্ষ প্রফুল বদনে। যিনি রতি রতি বাণ হানে ছই জনে।। প্রেমের ভরকে দোঁহে আভক্ত ভ্কানে। পজিয়া যুগলে বাহে খুগলের টানে॥ যৌহন ভরণী একে তরুণ তরণী। नदीत्म अवना वाला स्वपारक वस्ती। জানাড়ি অবোধ মন জবোধ কাণ্ডারী। সাধা কি জমাতে পারে দে সাগরে পাড়ি। নাগর সাগর তাহে রদের সাগর। আনম্পে আনম্দে পার হলো গুণাকর।। কিশোরী ভালোক ধজি করিয়া ধারণ। উল্লাস আহলাদ বেগে করেন গমন।। পিরীতি তুলানে ধনী হলো বানচাল ! কুমদ বাহিয়া যায় দিয়া ভক্তিপাল। ধরিরা নাথের তরি সাধুর কুমারী। র্যতনে যে সাগরে জমালেন পাড়ি॥ अहे कटल कुचटम नाकारत्र थनी नाती। নিত্য নব রঙ্গ করে কিশোরী কুমারী।। षानम कोडूद अछ श्रेत तकनी। श्रानत्य कुक्षे ११ कत्रिष्टा धनौ॥ कूमन विमात्र श्टम हिनान वांत्राम । পুর্ব্বমত রজ্জু দিয়া কিশোরী নামার।। যতনে হেরিছে দোঁতে দোঁহার নয়নে ৷ রচিয়া পরার ছব্দে রাজক্ব ভবে ॥

্কুমদ কামিনী।

কুমদ কিশোরীর মান। ত্রিপদী।

এট কপে ছুই জনে, নিচ্য নিশিতে গোপনে রঙ্গরঙ্গে পোহায় রজনী।

রার বলে বিনোদিনী, শুন গজেন্দ্র গামিনী। সভ্য বাণী কহু মোরে ধনী।।

আজি দিবসে শর্মে, দেখেছি আমি সপনে, তোমার গুহুতে অপরূপ।

জিনি পূর্ণ শশধর, এক পরম স্কুন্সর,

ति क्टलंत्र मा (मिथि नक्षण।।

লইশ্বা ভাহারে সুখে, আছ বসিয়া কৌতুকে,

निहानरम करह निहाकन।

হেনকালে ভারে ভাসি, নিয়ত বাজার বঁলী, সে রবেতে নাহি তব মন।

कामि ভाविनाम मत्न, शूनः कित्र गांव वतन,

মূতনে মূতন সমাদর।

মূতনেতে বলে ঘাহা, পুনঃ নাহি থাকে তাহা, পুরাতন হলে জনাদর।।

পরে নিজা হলো ভঙ্গ, সে অবধি হর্ষ ভঙ্গ,

মনেং মানি ধিৎকার।

যদি যায় এ জীবন, নারীরে না দিব মন, রমণীর ঘটতা ব্যবহার।।

জন্তরে গঃল তার, জাধরের সুধার ধার, হাসিতে ঋপুর হরে মন।

মনোহরা মন চোরা, ব্যক্ত আছে দেখ ধরা, সদা ঘটে অনিভা ঘটন।।

कूममः कामिनी,।

अभिन्न किरणाती दश, जाल मन विश्वनंत्र, নারী রহে পুরুষের মত। भुक्ष मत्न भरह, अक्श मकरन करह, নারীরে মজার অবিরত।। হইলে তার প্রেমাধীন, ততু ক্ষীণ দিন দিন, তার ছঃখ না হয় বর্ণনা। थिक माथ कष्ट्र इत्र, किमरन हरता श्रहात्र, करताना मानीरत व्यवक्षना !! ला हरण छ। जित आग, जीतरन कीतन मान. তোমা বিনা জন্য নাহি জানি। তুমি মম গতি মতি, তুমি সর্কস্ব সঞ্চান্তি, শুন নাথ অধিনীয় বাণী।। ভাজ নাথ অভিমান, মানে রাথ মরি মান. এ অধিনী জাব্রিত তোমার। ধরি পাছ হে রাজন, শোক কর সম্বরণ, কিবা দোঘ দেখিলে আমার।। **र्हात कव कार्याम्यः,** विमृतिर्ह्मम वुकः, প্রাণ যায় কথা কও নাথ। अक जाल यात्र (थरम, आत वाहि ना विराह्तम, কেন হান হলে বজাঘাত।। नाहि शिल का जिमान, मारन दाधि निक मान, অভিমানে মগ্ন হলো ধনী। एडएक निक अड्रन. वनरम एक वनम, अर्थायुर्व यूधाः खःवननी ॥ কুমদের গেল মান, হেরে তার অভিযান,

किरणातीरत गाँउ भाग्न सदकाः

কুমদ কামিনী।

ভাক ধনী অভিমান, না বুবে করেছি মান,
সদা মম ক্লম বিদরে।।
হেরে বিরশ-বদন, দহে প্রাণ সর্কক্ষণ,
ক্ষম দোব রাখ মম মান।
ধরিয়া ধরণী পার, সাধে কত বুব রায়,
তবু নাহি গেল অভিমান।।
বাড়ে ক্রমে মনঃ ছংখ, খুচাও মনের ছংখ,
যায় ধনী জীবন আমার।
প্রবল মানত্রক্স, হেরিয়া দোহার রক্ষ,
রাজক্ষণ রচিল প্রার !।

कुमरमंत्र यानलकः।

कुमरमाहन कम्न छन विद्यामिनी।

किलाम वादम खन्न हहेल वामिनी।।

क्षरमाण कित्र याजा कद्यि वामना।

मदन द्रबन्ध अभीदन सूथा छत्रमना।।

क्षार्थ यमि द्रवेंट थाकि जानित शम्कार।

कर्या माक्कारण कहे आमात माक्कार।।

कितिया कुमन जान श्रवारक्ष चादत।

कित्माती जत्रस्त याम भित्रवादत चादत।

भित्रया यूथल कद्य वमान जानद्य।

क्रिमरम अमन कथा किर्द्या द्रवाय।

याहेद्य बादमाल द्रवाद कित्रया जामाथ।।

चाल क्ष्म महा धर्म जूमि दह स्वन।

क्षद क्षानिलाम हत्या जादर्थ द्रामन।।

कुक भारम वाधि धनी कतिरह इचन। গেল মন ছঃখ হলো বিচ্ছেছে মিলন । আলিক্ষ আল্পিনে প্ৰায় সন্তাপ। যুড়ান ভাপিত প্রাণ গেল মনস্তাপ।। রাম বলে গুণি ধনী পলকে প্রলয়। তোমারে না হেরে দেখি সব শ্নাময়।। নিয়ত বাসন। রাখি নয়নে নখনে। তোমারে তাজে কি পারি ঘাইতে ভবনে।। কিশোরী কহিছে নাথ জেনেছি যেনন ৷ কেন হে বাছাও ছঃখ কর জালাতন। পুরুষ এমরা নহে এক ক্লে রভ 🏲 অভিনৰ ফুলে ম**ন বাদে অবিরত।**। थ्किया नगरन करत महा नगाम्ह । আন্তর হইলে ভাবে অস্তরে আন্তর গ (रनक' (ल कुक्रिक रुद्रिक स्मी। हुई ब्राज वानिम श्रास १ईन हसनी।। कूमम कहिए। धनी (मह्का विश्व । ষ্ণানিক নিশিতে পুনঃ নাৰ হে বাসায় ॥ সনী বলে গুণনিধি দিবলে হেরিভে। নিয়ন্ত ব**্দনা মোর ভোমারে রাখিতে** ৷৷ कि कृषि (**२ एक्स खरन ग**माई एवाई । নতুবা সদত লমে জীবন বুড়াই 🛭 দিবসে চাহিয়া পথে থাকি দক্ষণ। নিয়ত তোমারে নাথ করিছে মরণ। সত্য কহিয়া যুচাও মনের জাঁধার। সত্য করে কহু মোরে নাথ ভূমি করি ।

ভানিতে ভোমার বাণী আছে হে বাসনা।
প্রভারণা অধিনীরে করো না করো না।।
কুমৰ কহিছে ধনী ভোমা সম আর।
ক্রিছ্বনে কেহ নাহি হেরিছে আমার।।
ভূমি সম ধন প্রাণ ভূমি হে জীবন।
হেরিলে ভোমারে হর ছঃথ বিমোচন।।
ভূমি তরু আমি লভা থাকি এক ঠাই।
ভোমারে লইরা সদা জীবন যুড়াই।।
ভাতিমান গেল দূরে বিজেদে মিলন।
পরার প্রবন্ধে রাজরুক ঘোষ কন।।

यित का यिनी कि कि ला जी ते शित है ।

प्राण्ड का ते दिल का का स्टिंग कि का का ।

शाया का ते दिल का का स्टिंग का का का है।

शाया कि हिंद्या भने यो के कुकुर ला ।

हे लि का कि ते में ने ति का का का का ।

हे लि का कि ते भने ति है है है है है ।

हे लि का का कि ते कि ते कि ते का है ।

शाया का का कि के कु ना कि ते कि का ।

शाया का का कि के कु ना कि ते कि का ।

शाया का कि ते कि कर कि ला तो ता ।

शाया का कि ने कि ति का कि तो ता ।

श्वित्र के कि का कि की का का ना ।

श्वित्र के कि का की की की की की की की ना ।

श्वित्र की का की ला कि ति निरंक ना ।

श्वित्र की का की ला कि ति निरंक ना ।

श्वित्र की का की ला कि ति निरंक ना ।

श्वित्र की का की ला कि ति निरंक ना ।

श्वित्र की का की ला कि ति निरंक ना ।

कुमम कामिनी।

ইন্দ্রকান্ত নামে অভি শান্ত সমাগর। 🗀 भटन यादन कुटल नीटल नर्काश्यम सुन्मतः।। কিশোরী ভাহার সুত নাধু সুপণ্ডিত। বিহারের লাগি মনে সদত চিন্তিত।। সুবর্ণের বাঁশী এক দির†ছে সে ধনী। প্রভাহ নিশীতে যান করে ভার ধনী।। গৰাক্ষের **দ্বার হতে রজ্জু আ**রোহণে। खार्यम करतम वास्त्र मिठा मश्रमाभरम !!. প্ৰভান্ত হইলে পুনঃ আদেন এথানে। ত্রজনের বাকা মায়া তুই অনে জানে।। মণি নাপিতিনী বাসে করিল গমন : কামিনী কুমদে কয় বাঁশীর কারণ।। কোথা পেলে গুণনিধি সুবর্ণের ঠালী। विविद्रिश कर श्रमिवादव बालिलामी।। গোপনে লুকায়ে বাঁশী রাখিস কামিনী। অমে সুখাকর সু প্রকাশ দিব। জিনি।। विक्षेत्र मामश्री माना करत कलरयांग। কিশোরীর বাসে থেতে করেন উদ্যোগ।। मः भाग चुसिर्व दांगी क्रमप्रशाहन। বাঁশীর কারণে হন আকুল ভখন।। হায় বাঁশী কোথা বাঁশী কোথা বাঁশী পাই। কেমনে ভাহার বাদে বল আমি যাই !! না পাইলে বিনী মম মরণ মকল। त्म दें भी विश्वत आग श्रक्ट हक्ष्म ॥ বিমর্ষ দেখিরা ধনী জানিল অন্তরে। বিনয়ে জিজানে নাথে পরম আনরো 🕩

কি লাগিয়া হেরি নাথ বির্বস্বদন। ক্লার দ্বঃথে দেখি দুখি কহ বিবরণ।। রায় বলে রুসবন্ডি মন নহে স্থির। গঙ নিশি সপ্প দেখে হভেছি অস্থির।॥ কামিনী কহিছে নাথ করেছি মনন। भागतम खदानी शन कतिन श्रुकन।। मश्र मिटा मश्र मिथि कतिन माध्या। (मधि कृष। करत किमा कतालरम्भा।। নিক্ছনে গুহের মধ্যে থাকিব রাঙ্গন। থাকিয়া একাকী আমি কনিব পুসন।। রায় ভাবে মবে মনে কিশোরীর রূপ : वंशि मा भाडेश रहा खाद कड कथ !! খার হার প্রাণ যায় করি কি-উপায়। व्यापारम श्राम (एरत उउटन धार्य गाम्र ।। काथाइ उहिल क्ल (म विश्वनमी। सूर्यत यामिनी इत्ला हुः यव तलनी ।। ক্ষপাকর কুউদিত আমার ভাগোতে। कादा भएन स्टार काक महिएक (थरमटल ।। কবি রাজকৃষ্ণ কয় নৃপের কুমার। ভোমার দিয়েছদ ক্ষেদ কোঝা সাধ্য কার।। কথন ভক্তর হত কথন জঙ্গনা। क्थन बाकाद्य वामी कुला उक्रमा।। मलिएक मालको दिनाटक करहम कामिनी। রাধ রাখ মম বাণী আমার নশ্দিনী । গোপনেতে সপ্ত ভরি করগো শাব্দন। যেন নাছি স্থানে যেন এসব রাজন ৷৷

कूमक कामिनी।

ভাজা মাত্র ছই দাসী চলিল সত্তর। সপ্ত থানি ভরি দেখি অতি মনোহর।। নিৰূপণ কৰে দোহে কবিল গ্ৰমন। পরেতে কামিনী তরি করে আরোহণ।। দাসামা লট্টল ধনী ভরির ভিতরে। তিন জনে পুরুষের তিন রূপ ঘরে !! মল্লিকে মালতী দোহে হল চোপদার। কি কৰ দেখিতে শোভা অভি চমৎকার।। কাহিনী আপুনি ধনী হলো সমাগ্র। ক্রমতে উঠিল সবে তরির উপর।। त्नोकानाहि शरन कटर सूधार क यमनौ। স্কল্য কাহিয়া চল সকলে তর্ণী।। পুনঃ নিশি অবসানে আসিবে এথানে ৷ এ সকল তাকা বেন কেছ নাছি জানে। কামিনীর আদেশেতে খুলি সপ্ত তরি ! ठिलन किश्रि**९ पूर कांगी প**हिरुदि॥ প্রভাত যামিনী হলো বাহিছে তর্ণী। মহা শব্দে করিতেছে দামার ধানি।। মণিকর্ণিকার ঘাটে ভরি উপন্নিত। সপ্ত তরি দেখি সতে ভাবে চমকিত।। পরেতে পাঠান দুত সাধুর ভবনে। বিবাহের বিবরণ লিখিয়া যতনে !! निभि तात्र इर्व मान मान को हिन्छ। मितिरमेव ममांगरत मेव निरंगित ॥ শুনে সাধু সদাগর আপন গৃহেতে। কামিনীরে লয়ে যার করিরা নঙ্গেতে।।

দিলেক উত্তম স্থান করিয়া যতন। श्रादर्क किछारित नाधु तत विवद्रश ।। काभिनी कहिएह दांग क्ली है नश्र । সুখ্যর রাম নামে তথা সদাগর।। ভুবনমোহন নাম তাহার তনয়। যর্ভ মাহা হলো গত তাজিয়া আলয়।। শকর করিতে ঘাই শিল্ট মগর। তথা হতে আদিয়াছি তোমার গোচর !! কিশোরী নামেতে আছে ভোমার কুমারী। পরমা কপদী নাহি জুলা তার নারী। বিভা করিবারে আসিয়াছি মহাশয়। জুরিত বলগো মোরে ফেবা যুক্তি হয় 🛭 শগর করে বাছা শক্তি কর মন। ভোষারে মম সুতারে করিব অর্পণ !! হেরিয়া ভোমার কপ যুড়ার হে প্রাণ। সস্তান নাহিক মম ভূমি ধ্যান জান।। কিশোরীরে দিয়া বাছা তোমারে পাইব। নিয়ত নয়ন ভরে তোমারে হেরিব 🖟 নারীর চাতুরী হেরে ভাবিগো **আ**কাশ: कवि द्रांबकुक (शांव कदिन अकाम।।

কামিনীর কিশোরীর সহিত ধিবাহ ও তরি আরোহণ সদাগর রমণীরে হরিষ অন্তরে। বিবাহের সবিশেষ কহেন আদরে। কর্ণাট নগরে বাস সাধুর নন্দন। না দেখি সক্ষপ ৰূপে মদনমোহন।

कुम्म कामिनी।



কিশোরীরে দেই চাহে বিবা করিবারে। যেবা যক্তি হয় বল জিজাসি তোমারে॥ জামতার যোগ্য বটে বাবে মন দিতে। প্রকাশিয়া কহ মোরে যেবা আছে চিতে॥ নিবেদন করি নাথ বিষয় বচনে। কনাবি বিবাহ দিতে অয় এইকণে।! কি জানি দিনের গতি বলা নাহি যায়। कथम अझारि कांश कि निधि घड़ेात ॥ অভএব কৰি আনি কৰিতে নিৰ্কাই। উচিত ছয়ায় নাথ দিতে হে বিবাহ।। রম্বীর বাক্য শুলে লাগ স্থাগর। গ্ৰহতাৰ্য্য আনিধারে পাঠান কিন্তুর।। জ্বানায়ে আচার্ন্য হার দিবা করে কির। ए अ मार्थ विवाह भिलान किल्मावीर । বিবাহের পরে যাহা আছে পুরুষপর। ক্রমেতে নিকাচ করে সুখে সদাগর।। काशिमी किटमाती पाटर इंडेल निलम । कुमरम किटमाड़ी क्रांच श्राता विश्ववत्।। নিয়ত কামিনী ধনী থাকে সাবধানে। ভাক্ত হয় গুলু কথা পাছে সাবু জানে।। ওথানেতে ইক্তকান্ত জানে না সন্ধান। मद्भव जेलारम करत नाना अर्थ मान ॥ জামতারে লয়ে সাধু আ্রন্দিত মনে। ভোজন করান সুখে জাতি বস্থাণে। काशिमी विमटत क्यमाधुत मनन। . অবধান নহাশয় করি নিবেদন।।

N.

एशब्स स्टब्स्ट मन गहित्क कानत्र। চিত্রেছে নাহিক সুখ कंग्रे नाভিশন্ন॥ ছয় মাস হলো গত ত্যাঁজয়ে নিবাস। নিলট সহরে করি সুখেতে প্রবাস।। এখন বিলম্ব আরু সহেনা সহেনা। र्घ एक गरा मन श्रीताप मोरनना !! গুনি জামভার বাণী ইন্দকান্ত বার: র্জ্ত কাঞ্চন ক্ত দিল জামভায় 🛚 কিশোরীরে সঙ্গে দিল হরিষ অন্তরে। জাপনি আইল সাধু তরির উপরে।। আমতারে সমাদরে ভূষিয়ে বচনে ৷ কিঞ্ছিৎ বিলয়ে জান আপন ভবনে ৷৷ कांमिनी मालडीरत करहन थीरत धीरत। এ কথা না কর ব্যক্ত কন্তু কিশোরীরে।। কিঞ্চিৎ **ভূরেতে ভ**রি রাখিবে যুস্তনে। বাশাতে যাইব পুনঃ ছজনে গোপনে।। তরি হতে চুই জনে উঠিয়া সম্ভৱে। ভাবিয়া চিন্তিয়া জান কুমদ গোচরে।। নারীর চাতুরী হেরে ভেবে প্রাণে মরি। ताम कृरक वरस क्क मिल शमन्ति॥

কামিনীর কিশোরীর সহিত রহান্ত।
কুমদের বাশী লয়ে কিশোরীরে ধনী।
আনন্দে দেখান হাসি সুধাংগুরদনী॥
কাহার বাঁশরী এই দেখলো চাহিছা।
কি দোষে সে জনে ধনী দেখা না চাহিলা॥

(क्न हर्ला (म ভाবাবের অভাব এখন। এक वादत रम श्रामदत इटल भागत्र।। একি ভাব অসহব সম্ভব না হয়। মণি মানী বল কোথা গেল এ সময়।। কিশোরী পাইয়া ভয় ভাবে মনে মনে। প্রোণনাথ এ সংবাদ জানিল কেমনে । टकमत्न कारांत्र वं भी निवा द्वांग अन्। তবেত জেনেছি এর সব বিধরণ।। হাম বিধি রাখ আণ কর পরিবাণ। কলত সাগারে মান রাথ ভগবান।। किटमारी किए इ बाथ मि अबा खाउना। অফ্রণে কেন দাও বচন যন্ত্রণ।। বনিদ্র মতন সদা থাকিতাম বংগে। কাই নদা সশক্তিত জনকের ভাষে। क्रियान अमन कथा कर् छन्मांने। गका मिथा। क्रांटन मत हुम्स मीमम्बि।। কামিনী কহিছে ধনী আহা মরি সরি। বঞ্জিতে ক্লারে লয়ে নিত্য বিভাবরি॥ কে যেত গবাকের দ্বারে রজ্জু ভারে**াহণে।** ভাষারে ভুলিলে ধনী ক্রিসেরি কারণে।। তরি হৈতে দৃণস্থতা উঠি সংগোপনে। लेलभीक इटला भिन्ना कृत्रम मम्दन।। পুরুষের বেশ সব লুকারে রাধিয়া। क्रमरमरत कम शिव्रा विनद्य कतिवा।। কেখায় কিশোৱীনাথ কহ মহাশ্র। যার লাগি হয় তব বিদীর্ণ হৃদয়।।

क्रियन आदि त्र तल सूधाः खन्तम्यो । शांद्र ना (इदिटल ভाव कियम तक सी।। সে এখন কেখা নাথ কহ সমাচার। মণি মাদী গেল বল কোথায় তোমার॥ নিত্য নিশীতে যেতেহে বাজায়ে বাশরী। কোথার এখন নাথ প্রাণের কিলোরী।। द्रोप्र मान मान जाति कानिक (क्यान। মণি মাদী আদি বৃদ্ধি বলেছে গোপনে ।। কুমদ কহিছে ধনী জান কত হল। পরের কথার মন করে। না চঞ্চল ।; कांमा यह दिटमाहिनी खाना नाहि खानि। কহি শুন বিশেঘিয়া এই সভা বাণী।। এবার নিভান্ত বাসে করিব গমন। বৈরক্ষ না পরে খন সৰা উচ্চাটন : শাধ্যা সভী পতিৱত। কামিনী কুমারী। त्रा करूथ करत् जूना द्वित नारि नाती ।।

कूमम्दर्भारत्मत्र व्याटकश ७ ७ वि व्याद्वाहन । ওনিয়া বিবাহ কিশোরীর ভাবে রায়। নেত্রে বহে সত ধারা ধরা নাহি যায়।। হার বিধি একি দায় ভানালে পাথারে। এ যেন চোরের ধন লয় বাটপারে॥ বছ ভাগে৷ পেয়ে তাম ছিলাম আনন্দে! **७४न (क्यान इक यमा निवासला ।** সে আমার ধন প্রাণ গজেন্দ্র গামিনী। मा र्हितल मरह आंग मिवन श्मिनी।।



ে ভাহার সুধেতে সুখী থাকি সর্ককণ। ভার কপ হলে মনে বিরুষ বদন ।। নিয়ত নয়নে হৈরি সহনে সপনে। এখন তাহারে ভাবি হেরিব কেমনে।। সে ধনী আমার হরে লয়ে মন প্রাণ। এখন ভাত্তির ভাবি করিল প্রস্থান ॥ হায় হায় প্রাণ যায় 5:4 কর ক্ষি। আমার বোধার তথা বাক্ত করা দায় ৷ বিষ ভাঠাধর ভার থাদি ভাল বামি। ংহারলে ভাহার হাসি নাশে ছঃখ রাশী।। यथन मीटबट्ड इन्ड फिर्झ थाटक मनी। সে'শোলা দেখিতে শোভা বিছাত বরণী ॥ क्षिनीदा कन दांत्र कतिह। यस्न । চল হাই রন্বতি জাপন ভবন।। এপানে খাকিতে আরু নাহিক বাগনা। वादम शिह्य हल क्षि ह पुनाव साहना । কামিনীর সপ্ত ভরি ছিল যে বাজন। তাহাতে জুন্দে লবে করিল গ্রন্থ। ইলিতে ভুমদে ধনী দেখার কিলোরী। বলে এরে চিত্তে পার দেশ রূপাকরি।। ইহার কোথায় বাস কিবা নান হয়। বিবরিয়া প্রাণনাথ লহ পরিচয়।। কটাক করিয়া গেস ছজনার চঃখ। छेमम् वमस इरला छेथलिल सूर्य ।।-রায় বলে বিধুমুখি পাইলে কোখায়। কেমন করিয়া এরে জানিলে হেখায়।

ভোমার অসাধ্য কিছু নাহি ত্রিভূবনে। তোমার সনান নারী না দেখি নয়নে।। कार्मिमी कहिए नाथ कदि निरंतमन। ্মণির নিকটে গুনি তব বিবর্ণ।। শিবানী দেবিব যবে বলিছে ভোমায়। সেই দিন গিয়াছিত্র জামি হে ভথায়।। সদাগর হয়ে জবে আমিহে ভরণী। ভাহার হৃত্যক্ত জান নাহি গুণমণি।। অবিভান্ত যাহে তরি নৌকা বাহিলণ। বায়ুবেগে ভীর সম করিছে গমন।। ভাহে হরি হরি ধনী করে অবিরতঃ পশ্চাতে রাবিয়া যায় দেশ কত শত।। দীনমণি গুণমণি আকুল অন্তরে। আবুল হইয়া জান ক্ষন্ত গিরি পরে।। নিশাকর সুথকন লবে সু উদিত। কুমদ হেরিয়া হলে। পুলকে পূর্ণিত।। সেই নিশি সেই স্থানে বঞ্চিল সুখেতে। প্রভাতে উঠিয়া বাহে মাবিক গণেডে।। কেহ বলে হতি হতি কেহ বলে ভারা। কেহ বলে নিস্থারিণী তার ভব স্বারা।। অপার হরির লীলা বোঝা সাধ্য কার। রাজক্রক কতে পর্য রচিয়া পরার।।

কুমনমোহনের সুরাট নগরে উপদীত। বাহিতে লাগিল ভরি নৌকাবাহি গণে। সুরাতারে যায় তরি প্রম গমনে।।

कूमन कामिनी।

ककारिया नाना (मन वक्ष मिन शहर । উপনীত হলে। शिया पूताहे महादेश কুমদ্বেষাহন রায় উঠিয়া সন্ধর। চলিংলন বাসে হয়ে হরিশ অন্তর।। দেখেন আপন শোকে জনক জননী। मन हुः एवं करत व मितिय तक्षती।। অবিভান্ত শোকবারি বহিছে নয়নে। कुमरम ना स्टात कान्त राताह क्षत्रान।। অন্য কথা নাহি দণা কুলদমোচ্ন। নপনে ভূমদ বলে করেন রোদন।। **छ्क्षर**नत रथल छःथं रहतिया नन्तरन । कांचिनी किरणाड़ी त्राट्ड षानिना दकरम। কূলবধু গণে সবে দেয় উলুধানী। पूर्विक इत्ना रहरत क्रवक क्रवती।। मीन दीन विकाश रशहान अवात । রজ্ঞ কাঞ্চল কন্ত বিভয়ণ করে।। কংহন কিন্ধর গণে নূপের ভনয়। তরণী হইতে দ্রব্য আনিতে আলয় 🛭 আদেশে কিন্তর গণে আদিল ছুরার। दनोकावाहिशद्ध मिल तक् धन ताता। প্রণাম করিয়া সবে চলিল সম্বর। ভরণী খুলিয়া সবে হইল অন্তর 🕛 🔻 জ্ঞাতি বন্ধাণে গীর জানায়ে সকলে। ट्यांकन क्यान गरंद महा कूक्रांटा ॥ মিন্টার সামিত্র করু পারেল লিউক खालन कतिरह क्षेत्र में के शहर में किया।

विन्नं विन भटर भूट्य विशे देखा छात ।

बान कीर्य भर्ता है है जा का कुमन । इन्हें

के ते स्मान का इका कुमन । इन्हें

के ते समान का इका कि एक विकास

मार्ग द्यान का विद्या कि विद्या कि विद्या ।

विद्या विद्या दियां के दिशा कि विद्या ।

काम बाजा दियां के दल्ली सम्भाग ।

काम बाजा दियां के दल्ली सम्भाग ।

শানি ছারাছার, থানিক কি ছব আছি।
সংক্ষেপ্তের কি পারিছে।
সংক্ষেপ্তের করি কিল পুর্কে ব্যবহার
ভাগি প্রাক্তির পিছা মহাশ্রন
ভাগি যা কুল কলিন, গরিলে আদি অকালে,
সে অসুধি প্রান্তির ভাগি অকালে,
ভাগি যা কুল কলিন, সানা গুলা গুলান,
ভিন মুখা ভাগি নাল গুলা গুলাক হলে,
ভিন মুখা ভাগি নাল গুলাক হলে,
ভিন মুখা ভাগি নাল কলেন ছবল।
কি ক্রি লয়ে আকুল, ভেলেনা হলে।
কি ক্রি লয়ে আকুল, ভেলেনা হি পাহ স্বা.